द्वितीय अध्याय

"सेठ गोविन्ददास के विवेच्य नाटकों का सामान्य परिचय।"

द्वितीय अध्याय
'सेठ गोविन्ददास के विवेच्य नाटकों का सामान्य परिचय''

2.1 नाटक का स्वरूप -

भारतीय साहित्य में नाट्य परम्परा बहुत ही प्राचीन रही है। नाटक की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विभिन्न मत-मतान्तर है। ''डॉ. रिजवे नाटक की उत्पत्ति के संदर्भ में नाटक के मूल में मृतक वीरों की पूजा को ही प्रधान मानते हैं। उनके अनुसार प्राचीन काल में महान मृतात्माओं के महत्व तथा उनके प्रति अपना आदरभाव प्रकट करने के लिए नाटक अभिनीत किये जाते थे।''[1] यह कथन आंशिक रूप में सत्य है। यदि इसे पूर्ण रूप से सत्य मान लिया जाय तो नाटक की सीमा को बहुत ही संकुचित कर देना पडेगा। डॉ. पिसळे कठपुतलियों के नाच से नाटकों की उत्पत्ति मानते है। प्राचीन नाटकों में 'सूत्रधार स्थापक' आदि शब्दों का प्रयोग होने के कारण इस बात की पुष्टि होती है। कठपुतलियों का खेल भी तो एक प्रकार से नाटक ही होता है। उसमें पात्रों का स्थान केवल कठपुतलियाँ ले लेती है।

भारतीय विद्वान नाटक की उत्पत्ति वेदों से मानते हैं। वेदों से आये कुछ संवादों को नाटक का मूल रूप माना जा सकता है। 'वाल्मिकी रामायण', 'हरिवंश पुराण' आदि ग्रंथों में भी नाटकों का उल्लेख मिलता हैं। इससे यह सिध्द होता है कि हमारा नाट्य-साहित्य प्राचीन है।

नाट्याचार्य भरतमुनि ने 'नाट्यशास्त्र' में सर्वप्रथम नाटक के शिल्प का सूक्ष्म विवेचन किया है। उनके अनुसार , ''अनुभव और विभाव संयुक्त रचना काव्य गीतादि से इंजित होकर नटों द्वारा जब उसका प्रदर्शन होता है, तो उसे नाटक कहते हैं।''[2]

2.2 'हर्ष' नाटक का सामान्य परिचय -

'हर्ष' नाटक 1935 में प्रकाशित हुआ है। इस रचना में हम प्रारम्भ से अन्त तक बहस या तर्क-वितर्क की ही योजना पाते हैं । हर्ष के समय का सजीव चित्रण इसमें दिखायी देता है । इस नाटक की मूल समस्या समस्त देश में एक राष्ट्र की स्थापना की है। सम्राट हर्ष स्थाण्वीश्वर के राजा और भारत के अन्तिम हिन्दू सम्राट है। 'हर्ष' नाटक में सेठ जी ने

सातवी सदी का ऐतिहासिक वातावरण बडी अच्छी तरह समाविष्ट किया है। साथ-ही-साथ धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक स्थितियों का भी वर्णन मार्मिक ढंग से किया है। हर्षवर्ध्दन और गुप्तवंशज में संघर्ष और वैचारिक मतभेद दिखायी देते हैं।

'हर्ष' नाटक में उस समय की राजनीतिक वायुमंडल और आपसी संघर्ष में हर्ष, शशांक, माधवगुप्त और आदित्यसेन की भावनाएँ नाटक में अत्याधिक सजीवता से अंकित हुई है। 'हर्ष' नाटक हर्षवर्ध्दन के जीवनवृत्त से सम्बन्धित है। इसका कथानक हर्ष के बडे भाई राजवर्ध्दन की मृत्यू के पश्चात आरम्भ होता है। हर्ष अपनी विधवा बहन को सम्राज्ञी बनाता है। वर्ध्दन वंश का उत्थान और गुप्तवंश का पतन, प्रतिव्द्ंद्वी शशांक और आदित्य का षडयंत्र, माधवगुप्त का मित्र-प्रेम, राज्यश्री और हर्ष का भाई-बहन प्रेम और प्रजा द्वारा 'हर्ष' को देवता का आदर्श रूप मानना आदि चित्रण सेठ जी ने हर्ष नाटक में किया हैं।

प्रथम अंक :-

कथानक के प्रथम अंक की शुरूआत समस्या से होती है। राजसिंहासन के प्रति उदासीन शिलादित्य विचार कर रहा है। स्थाण्वीश्वर के राज-प्रासाद में राज सभाकक्ष में महामंत्री आवन्ती और महासेनापति सिंहनाद की वार्ता इस समस्या को लेकर होती है। माधवगुप्त के कहने पर शिलादित्य राज्यग्रहण करता है। शिलादित्य राज्यग्रहण करते वक्त दो बातों का वचन लेता है। पहली बात मैं विवाह नहीं करूगाँ और दूसरी व्यर्थ का युध्द रक्तपात न करूगाँ। इन दो बातों से क्या अनर्थ हो सकता है, इसका विवेचन नाटकीय संवादो में दिखायी देता है। शिलादित्य कहते हैं विवाह करने से पुत्र-प्राप्ति होगी। संतान अयोग्य होगी तो राज्य का क्या होगा ? मैं अपना प्रेम बाटना नहीं चाहता। पूरा जीवन मैं प्रजाहित और मेरे देश के लिए अर्पित करना चाहता हूँ। दूसरी बात युध्द-रक्तपात की यह सभी बाते मैं व्यर्थ मानता हूँ। रक्तपात करके जो राज्य हमें मिलता है उसमें शांति, सुकून नहीं रहता उसमें सिर्फ गरीबों की बदुआएँ रहती हैं वह राज्य फौरन चला जाता है। भाई राजवर्ध्दन के हत्या के पश्चात्य शिलादित्य सभी के संमती से सम्राट बन जाता है। अपनी विधवा बहन राज्यश्री की खोज करना शुरू करता है।

आवन्ती और सिंहनाद बैठे हुए हैं। आवन्ती कहता है कि इस समय गौड़ाधिपति शशांक नरेन्द्रगुप्त से बदला लेने के विचार को छोडकर केवल राज्य की रक्षा करनी चाहिए। तब आवन्ती कहता है, "परमभट्टारक महाराजधिराज प्रभाकरवर्ध्दन के कैलासवास होते ही स्थाण्वीश्वर के राज्यवंश और राज्य की यह दशा होगी कि हम परमभट्टारक, राजवर्ध्दन के हत्यारे अशोक से बदला तक न ले सकेंगे, यह मैं सपने में भी नही सोच सकता था। स्थाण्वीश्वर के भूत-काल की शक्ति और वैभव की यह दुर्दशा।"[3] यहाँ शिलादित्य भाई राजवर्ध्दन की हत्या और राज्यश्री के वैधव्य के कारण नाराज दिखायी देता है।

माधवगुप्त गुप्तवंशज होते हुए भी शिलादित्य का मित्र और वर्ध्दन वंश का आधारस्तंभ है। अपने संसार को, वंश को भूलकर सदा आदर्श महापुरूष राजा शिलादित्य के मंगल कामना में दत्तचित रहता है। शिलादित्य और माधवगुप्त में मित्र-प्रेम दिखायी देता है। सच्चा दोस्त जीवन में मिलना आजकल मुश्किल हो गया है। मालवेश देवगुप्त ने अपने भाई महाराज राजवर्ध्दन का वध किया और उन्हीं के कारण बन्धु कुमारगुप्त का वध होने पर भी माधवगुप्त ने शिलादित्य का साथ न छोडा था। शिलादित्य और माधवगुप्त एक राह पर चलनेवाले दो अलग व्यक्ति है लेकिन उनकी मंजिल एक है। परम मित्र के कहने पर शिलादित्य आखिर सिंहासन ग्रहण कर लेता है। शिलादित्य कहता है संसार में हर वस्तू परिवर्तनशील है, परिस्थिति के नुसार अपने निश्चयों को बदलना ही बुध्दिमत्ता है लेकिन माधवगुप्त अंत तक नहीं बदलते।

शिलादित्य अपने को राज्य का संरक्षक सिर्फ मानते है। मैं कभी भी राज्य का स्वामी और राज्य को अपनी सम्पत्ति नहीं मानता। इस प्रकार शिलादित्य निस्वार्थ रूप से अपना कार्य निभाता है। राज्यश्री की खोज में हर्ष सफल होता है। शिलादित्य का पहला निश्चय राज्यश्री को ढूँढ निकालना और उसे सम्राज्ञी बनाना। शिलादित्य की बहन राज्यश्री की खोज का वर्णन यहॉ पर दिखायी देता हैं। पहले अंक के चौथे दृश्य में गंगा नदी का वर्णन, सैनिकों की झोपडियाँ और गद्दी पर शिलादित्य दिखायी देते हैं। राजसिंहासन ग्रहण करने के पश्चात शिलादित्य का नामकरण 'हर्ष' होता है। हर्ष का अभिवादन करने और मित्रत्व

का प्रस्ताव लेकर कामरूप के राजा कुमारराज भास्कर वर्धन आते है। तब शिलादित्य माधवगुप्त से पुछते है। तब माधवगुप्त कहते है - " कुमारराज बडे सज्जन व्यक्ति ज्ञात होते है, परमभट्टारक। यदि इस देश के अन्य परपतिगण भी आपसे इस प्रकार मित्रता कर ले तो जिस रक्तपात से आप घृणा करते है, उससे दूर रहकर भी आप चक्रवर्ती सम्राट हो जायेगें। "[4] इस प्रकार परम मित्र माधवगुप्त के मदद के बिना हर्ष कोई फैसला नहीं सुनाता।

इस साम्राज्य का कोई भी माण्डलिक राजा अपने को राज्य का स्वामी नहीं मानेगा वह दिनरात सिर्फ प्रजा की सेवा करेगा। इस प्रकार शिलादित्य के विचार आदर्श हैं। स्थाण्वीश्वर का सेनापति भण्डि राजा को अभिवादन करते सिंहासन ग्रहण करने की बधाई देता है। भण्डि सेना लेकर शशांक नरेन्द्रगुप्त गौड के राजा पर आक्रमण करने चला जाता है। हर्ष बची हुई सेना लेकर विन्ध्या की ओर राज्यश्री के खोज में चला जाता है। राज्यश्री की चिंता हर्ष को सता रही है। चारों तरफ हर्ष, माधवगुप्त और सैनिक राज्यश्री को खोज रहे है। घना जंगल है, सभी ओर सन्नाटा छाया हुआ है। विन्ध्या का राजा निर्गुहट ने अपनी सारी सेना की शक्ति लगा दी है लेकिन कही भी राज्यश्री का पता नहीं चलता। हर्ष चिंता में डुबा हुआ है, किस मार्ग से, घर से बाहर राज्यश्री कहाँ गयी होगी? ढेर सारे सवाल हर्ष के मन में उत्पन्न हो रहे हैं। लेकिन विन्ध्याधारवी राजा निर्गुहट और सैनिकों के मदद से नर्मदा नदी के पास आखिर राज्यश्री का पता चल जाता है। प्रेमगीत गाते हुए सखियों के साथ राज्यश्री लकडियाँ तोड रही है। राज्यश्री अपने बीती हुई जीवन गाथा पर दु:खी होकर पश्चाताप व्यक्त कर रही है। हर्ष राज्यश्री नाम से पुकारते ही राज्यश्री आश्चर्यचकित होती है और भागने लगती है। हर्ष अत्यानंदित हो उठता है और जोर से कहता है - "राज्यश्री ! राज्यश्री ! राज्यश्री कहती है, कौन ? भ्राता, शिलादित्य का शीघ्रता से प्रवेश, राज्यश्री शीघ्रता से धधकती हुई चिता की ओर बढती है, पर हर्ष दौडकर उसे पकड लेता है।"[5]

इस प्रकार पहले अंक का प्रारंभ सिंहासन ग्रहण करने की समस्या से हुआ था और अन्त हर्ष को अपनी विधवा बहन राज्यश्री के मिलने के पश्चात सुखान्त रूप से अंक की समाप्ति हो चुकी है।

द्वितीय अंक :-

दूसरे अंक की शुरूआत कर्णसुवर्ण नरेन्द्रगुप्त शशांक गौड का राजा और यशोधवलदेव गौड का सेनापति के वार्तालाप से होती है। माण्डलिक होकर भविष्य में विद्रोह करना क्या उचित होगा ? इस पर दोनों विचार-विनिमय कर रहे हैं। यहाँ पर कर्णसुवर्ण में शशांक नरेन्द्रगुप्त के प्रासाद का दालान, स्थाण्वीश्वर के राजप्रासाद एक कक्ष, कान्यकुब्ज का मार्ग और सभाकक्ष कान्यकुब्ज का चित्रण दिखायी देता है। दृश्य संख्या कुल मिलाकर इस अंक में चार है। हर एक दृश्य में नवीनता हमें देखने को मिलती है। इधर वर्ध्दन वंश में राज्यश्री को राज्यभार ग्रहन करने के विषय को लेकर हर्ष तर्क-वितर्क कर रहा है। हर्ष अपने विधवा बहन राज्यश्री को सम्राज्ञी बनाना चाहते हैं। स्वंय से ज्यादा अपनी बहन की मान मर्यादा और प्रतिष्ठा बढाना चाहते हैं। आखिर वह राज्याभिषेक के लिए राज्यश्री को मना लेते हैं। कुछ ब्राह्मण इस प्रस्ताव का प्रखर विरोध करते हैं और वह अंत तक हर्ष के विरोधी रहते हैं। एक विधवा स्त्री को सम्राज्ञी बनाना वह मुनासिफ नहीं समजते।

दूसरी ओर गुप्तवंश में शशांक और सेनापति यशोधवलदेव के बीच विश्वासघात शब्द पर संघर्ष चल रहा है। शशांक नरेन्द्रगुप्त का अन्तिम निर्णय रहता है कि, वर्ध्दनों की अधीनता अभी स्वीकार करे और वक्त आने पर विद्रोह करे। ''हाँ, समय परिवर्तित होते ही मैं इन वर्ध्दनों के विरूध्द विद्रोह करूगाँ।''[6] ऐसा शशांक यशोधवलदेव से कहता है। सेनापति यशोधवलदेव शशांक महाराज को हर तरीके से समझाने का प्रयत्न करता है लेकिन शशांक नहीं समझता। राजसत्ता के लिए शशांक स्वार्थी, लोभी और कट्टर बन गया है। मित्रत्व प्रस्थापित करके वह शिलादित्य की हत्या करना चाहता है और वर्ध्दनवंश का नामोनिशान मिटाना शशांक चाहता है। इसका वर्णन बहुत ही मार्मिक ढंग से 'हर्ष' नाटक में देखने को मिलता हैं।

शशांक कहता है कि मैं इतना महान कार्य प्रजाहित के लिए और गुप्तवंशज के लिए कर रहा हूँ। इसमें कोई पाप नहीं है। इस वक्त मैंने वर्ध्दनों से युध्द किया तो हार जाऊगाँ और माधवगुप्त के हाथ में साम्राज्य जायेगा। माधवगुप्त माण्डलिक होने के कारण राज्य 'हर्ष' के ही पास जायेगा। इसी कारण विचारविमर्श करके यह निर्णय लिया है। उसी वक्त

प्रतिहारी गुप्त चराधिपति ने स्थाण्वीश्वर और कान्यकुब्ज से संवाद लाये हैं। हर्ष ने सम्राट पद का त्याग देकर अपनी विधवा बहन राज्यश्री को सम्राज्ञी बनाना चाहते है। हर्ष विधवा स्त्री को सिंहासन पर बिठाकर नयी परिपाटी चलाना चाहता है। ऐसा प्रतिहारी शशांक नरेन्द्रगुप्त को सुनाता है। हर्ष और राज्यश्री बौध्द के अनुयायी रहे हैं। यहाँ पर बौध्द की विजय दिखायी देती है ऐसा शशांक कहता है। शशांक क्रोधित होकर कहता है - "यह वर्णाश्रम और स्त्री-पुरूषों के कर्तव्यों में विभेद माननेवाले आर्य-धर्म पर उस बौध्द-धर्म का, जिसमें न वर्ण हे और न आश्रम, जिनमें न पुरूषों के कर्तव्य भिन्न है और न स्त्रियों के प्रधान आक्रमण है। देखता हूँ, देखता हूँ कि शिलादित्य इस देश में पुन: बौध्द धर्म की स्थापना में सफल होता है या मैं आर्य-धर्म की रक्षा में।"[1] इस प्रकार शशांक हर्ष का हमेशा प्रतिस्पर्धी रहा है।

नेपथ्य में भट्टचरण का गायन सून पडता है। शशांक नरेन्द्रगुप्त गाना सुनते ही थोडासा शांत हो जाता है। गुप्तवंशज की कीर्ति गाता रहता है। शशांक कहता है अभी भी देशवासी अपने गुप्तों को नहीं भूले वह गर्व महसूस करता है। दूसरे दृश्य में राज्यश्री और सखी अलका बैठे है। राज्यश्री गाना गा रही है गाना गाने से राज्यश्री के मन को शांति मिलती है। राज्यश्री अलका को अपने बीती जीवनी सुना रही हैं। राज्य को छोडकर मैं क्यों गयी ? वहाँ पर क्या क्या करती थी ? और कैसे दुबारा यहाँ आयी ? इसका वर्णन दिखायी देता है। साथ-ही-साथ यहाँ आने के बाद भाई हर्ष की इच्छा के खातिर मैं सम्राज्ञी किस तरह बन गयी इसका भी जिक्र यहाँ पर किया गया हैं। राज्यभिषेक का वर्णन स्वयं हर्ष भी करता हैं।

हर्ष राजा अपनी बहन की हर ख्वाईश पूरी करता है। हर एक तमन्नाओं पर जान देने को निकलता है। हर्ष राज्यश्री के राज्यभिषेक का मुहुर्त भी निकलवाता है। तब राज्यश्री कहती है भाई मैं तो एक भिक्षूणी हूँ, आज तक विधवा - स्त्री कभी सम्राज्ञी बनी है ? इतना ही नहीं विधवा को किसी मंगल कार्य में भाग तक लेने का अधिकार नहीं है। तब हर्ष कहता है, "यह विधवा के प्रति घोर अन्याय है। जो विधवा समाज में ब्रह्माचार्य और सेवा का अद्‌भूत आदर्श उपस्थित करने के लिए समस्त लौकिक सुखों को तिलांजली देकर आजन्म तपस्या करती है, उसे मंगलकार्यो में भाग लेने का अधिकार नही। आह ! सच तो यह है कि,

प्रत्येक मंगल-कार्य का आरम्भ ही आर्यों को उस तपस्विनी के हाथों करना चाहिए। वह तो समाज के लिए साक्षात देवी है, राज्यश्री, साक्षात देवी।''[8] इस प्रकार नाटकीय संवादो के जरिए से हर्ष अपनी प्यारी बहन राज्यश्री को अन्त में राज्याभिषेक के लिए राजी करते हैं। तब हर्ष आनंदित होकर कहता है, ''मैं राज-काज में भी स्त्रियों को पुरूषों के समान अधिकार देने की परिपाटी चलाना चाहता हूँ। यदि पुरूष सिंहासनासीन हो सकते है, तो स्त्रियाँ भी, विधवाएँ भी।''[9] हर्ष को विश्वास है कि स्त्रियाँ भी आदर्श राज्य का निर्माण कर करती हैं।

राज्यश्री अपने भाई हर्ष की कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहती है, हर्ष तुम बडा त्याग कर रहे हो। तब हर्ष कहता है मैं तो अपना कर्तव्य निभा रहा हूँ। आपको सम्राज्ञी बनाकर स्त्रियों को मुक्ति दे रहा हूँ, नया सिध्दान्त स्थापित कर रहा हूँ मैं तो बौध्द धर्म का प्रसार कर रहा हूँ ऐसा हर्ष राज्यश्री से कहता हैं। राज्यश्री से इतना महत्वपूर्ण संवाद होने के बाद हर्ष की आज्ञा का पालन करती है। यहाँ पर भाई-बहन का निस्वार्थ प्रेम का चित्रण दिखायी देता है। लेकिन यह सब 'हर्ष' प्रजाहित के लिए कर रहा है। यह एक सिर्फ तरीका, योजना है और इसमें प्रजाहित ही महत्वपूर्ण बात है।

जब राज्यश्री का राज्याभिषेक होता है, तब इसका विरोध सब से ज्यादा ब्राह्मणों में होता है। भारत के इतिहास में और महाभारत में भी ऐसा नहीं हुआ है। ऐसा कुकार्य हर्ष ने किया है। एक विधवा...विधवा... स्त्री को भारत की सम्राज्ञी बनाकर बडा पाप हर्ष ने किया है। इसी कारण बौध्द धर्म और ब्राह्मण धर्मो का धार्मिक संघर्ष निर्माण होता है। उसमें से जो कट्टर विरोधक ब्राह्मण होते है वे 'हर्ष' के शत्रु बनते हैं। इतना सबकुछ होने पर भी हर्ष ने राज्यश्री का राज्याभिषेक बडे ही हर्षोउल्हास से करता है। राज्यश्री का राज्याभिषेक हो रहा है। हर्ष, शशांक, भास्करवर्मन, आवन्ती, सिंहनाद, भण्डि और माधवगुप्त अपने अपने सिंहनाद पर बैठे है। सभी ओर वाद्यों की ध्वनि और आनंदित वातावरण दिखायी दे रहा है। ब्राह्मणों को हर्ष अभिवादन करते है। महल की चारों ओर साजसजा दिखायी दे रही है। राज्यश्री का आगमन बडी सुंदर ढंग से होता है। सभी ओर एक गुँज उठती है। ''महर्षि, सम्राज्ञी राज्यश्री महादेवी की जय।'' महाधर्माध्यक्ष के कहने पर राज्यश्री सिंहासन ग्रहण कर लेती है। राज्यश्री की स्थिति उस वक्त कैसी हो गयी है इसका वर्णन हमें इस अंक में

देखने को मिलता है। ''राज्यश्री काँपते हुए पैरों और उदास मुख से सिंहासन पर बैठती है। महाधर्माध्यक्ष हाथ सें राजमुकुट उठाकर उसके मस्तक पर रखकर राजदण्ड उसके हाथ में रख देता है। फिर दूसरे थाल में से सुवर्ण का कलश उठाकर कुश के मार्जन का मन्त्र बोलते हुए उसका मार्जन करता है।''[10] और एक बार एक स्वर में 'महादेवी राज्यश्री की जय'। राज्यश्री काँपते हुए पैरों से खडी होकर मस्तक झुकाकर अभिवादन का उत्तर देती है।

इस प्रकार दूसरे अंक के अंतिम दृश्य में राज्यश्री का राज्याभिषेक समारोह अत्यंत आनंदित वातावरण में समाप्त होता है।

तीसरा अंक :-

तीसरे अंक का प्रारंभ राज्यश्री के राज्याभिषेक अठ्ठाईस वर्ष समाप्त होने के पश्चात प्रारंभ होता है। छः दृश्यों से इस अंको का निर्माण हो गया है। राज्यश्री गद्दी पर अत्यंत चिन्ता की मुद्रा में बैठी हुई हैं। वह विचार कर रही है। राज्यश्री की मानसिकता असंतुलित हो गयी है। यह सोचकर कि समस्त देश को एक राष्ट्र का रूप देने के जिस उद्देश्य को लेकर उसने सिंहासन ग्रहण किया था, उसकी पूर्ति अभी तक नहीं हो सकी। शिलादित्य, युध्द, विप्लव, शान्ति एवं राज्य संचालन के ही कार्यो में हमेशा व्यस्त रहता है। माधवगुप्त के पुत्र आदित्यसेन के मन में कुलाभिमान जागृत हो गया है। माधवगुप्त अपने पिता को वह हमेशा विद्रोही के रूप में देखता है। आदित्यसेन और माधवगुप्त में 'हर्ष वर्ध्दन' को लेकर अनेक बार वाद-विवाद होते है। शशांक नरेन्द्रगुप्त आदित्यसेन को और भी प्रोत्साहित करते है। साथ-ही-साथ बदले की प्रतिहिंसा की भावना को उजागर करते हैं।

माधवगुप्त हर्ष के परममित्र है। हर्ष आदर्श के प्रति हमेशा कार्यरत रहे हैं। हर्ष का सर्वांगीण विकास और महापुरूष के रूप में उनकी प्रतिमा का माधवगुप्त पूजन भी करते है। हर्ष के प्रति माधवगुप्त के मन में हमेशा आदरयुक्त भावना रही है। माधवगुप्त गुप्त वंशज रहते हुए भी, प्रजा संशयित दृष्टि से माधवगुप्त की ओर देखती है क्योंकि हर्ष के इतने करीब रहने के कारण कुछ हृदय परिवर्तन न हो ? लेकिन हर्ष कभी भी अविश्वास माधवगुप्त पर नहीं दिखाते। माधवगुप्त एक सच्चा देशभक्त, आदर्श स्वामिभक्त और सच्चे दोस्त के रूप में हमारे सामने दृष्टिगोचर होता है। निस्वार्थ रूप से कार्य करने के कारण अपने पुत्र को

समय-समय पर समझाता है कि इन बुरी हरकतों को छोड दो लेकिन आदित्यसेन इन्कार करता है। हर एक तरह से समझाने की कोशिश माधवगुप्त करता है लेकिन आदित्यसेन मानता नहीं।

यहाँ पर नाटक के अगले दृश्य में चीनी यात्री यॉनचॉंग का भारत आगमन हुआ है और उसने राज्यश्री के राज्यसभा में प्रवेश किया है। हर्ष और राज्यश्री के बीच उस वक्त युध्द को लेकर वार्तालाप चल रहा है। हर्ष राज्यश्री के प्रेरणास्तव युध्द से विरक्त होकर शांति का मार्ग आवलंबित किया है। चिनी यात्री यॉनचॉंग भी उस वक्त अपनी राय सुनाता है कि, अशोक के मार्ग को ग्रहण करने का उपदेश देता है। हर्ष सभी धर्मों का द्योतक है। आर्य और बौध्द धर्मो को वह एकत्रित देखना चाहता है। उस वक्त धार्मिक स्थिति में परिवर्तन आ गया था। ''हर्ष इस निश्चय को व्यावहारिक रूप देने के लिए शिव, आदित्य और बौध्द की प्रतिमाओं के सार्वजनिक पूजन और कोष की समस्त सम्पत्ति को दान योजना बनाता है।''[11] अलका और राज्यश्री के वार्तालाप भी यहाँ महत्वपूर्ण माने हैं।

शयन पर राज्यश्री बैठी हुई हैं। उसकी आयु लगभग 43 वर्ष की है। उसका शरीर आभूषणों से रहित है। अलका उसकी सखी है। राज्यश्री अपने मन की व्यथा बताती हुई अलका को कहती है कि यह ''राज्य समस्त भारत वर्ष में एक धर्म, एक भाषा और सामाजिक संगठन पर सारे देश का साम्राज्य चिर स्थायी रह सके। यद्यापि सारा आर्यावर्त अब तक साम्राज्य के अन्तर्गत है परन्तु एक राष्ट्र का निर्माण मुझे अभी भी उतना ही दूर दिखता है, जितना आज से अठ्ठाईस वर्ष पूर्व था।''[12] इस प्रकार राज्यश्री भी प्रजा के प्रति प्रेम देशभक्ति, आदरभाव और सिंहासन ग्रहण करते वक्त प्रजा से दी हुई वचनों को निभाती हैं।

हर्ष ने परायी पुत्री को अपनी पुत्री मानकर इस अपूर्व सुख को प्राप्त करने का प्रयत्न किया है। जयमाला उसका नाम है। वह बडा अच्छा गीत गाती है। यहाँ सन्तान के प्रति प्रेम वर्णन दिखायी देता है। बार-बार होनेवाले आक्रमण और अस्थिरता के कारण हर्ष कुछ नहीं करता। हर्ष बडा आशावादी मनुष्य है। जयमाला गहनों से सक्त नफरत करती है और अपने पिता हर्ष से वह सच्चा प्यार करती है।

माधवगुप्त के घर में शिलादित्य की एक बडी तसबीर इस दृश्य में दिखायी देती है। उस पर बडा पुष्पहार चढाया गया है। इस तसबीर को आदित्यसेन देखते ही वह क्रोधित हो उठता है और उस तसबीर पर बाण चलाने के लिए फौरन सुसज्ज होता है। लेकिन माधवगुप्त की पत्नि शैलबाला जो आदित्यसेन की माता उसे रोक देती है। आदित्यसेन पिताजी पर क्रोधित हो उठता है। गुप्तों की मानमर्यादा, प्रतिष्ठा को छोडकर शत्रू के प्रतिमा की पूजा कर रहे हैं। वे भी हमारे घर गुप्तवंशज में। हर्ष के पूजन से हमारा पतन होगा। आदित्यसेन क्रोधित होकर कहता है, ''माँ, तेरे चरणों की शपथ लेकर, तेरा यह पुत्र आदित्यसेन आज यह प्रतिज्ञा करता है कि वर्ध्दन-साम्राज्य-सत्ता का अन्त करके मैं फि र से आर्यावर्त में गुप्त साम्राज्य की स्थापना करूगाँ।''[13] इस प्रकार हर्ष के प्रतिमा के प्रति विद्रोही भावना आदित्यसेन के मन में दिखायी देती है। इसके पीछे प्रोत्साहित करनेवाले नरेन्द्रगुप्त शशांक का सहभाग है।

शैलबाला आदित्यसेन की माता उसे समझाती है। जिस प्रकार गुप्तवंश के महापुरूष है उसी प्रकार हर्ष भी आदर्श महापुरूष है। लेकिन लाख समझाने पर भी आदित्यसेन मानता नहीं। माधवगुप्त बडे प्यार से आदित्यसेन को समझाते हुए कहते हैं, ''अपने कुल का गर्व अपने बांधवों से सहानुभूति बुरी बात नही हैं, परन्तु इन भावनाओं के कारण यदि अन्य कुल वालों से ईर्ष्या की उत्पत्ति हो और इस ईर्ष्या से अन्धे होने के कारण यदि अन्यों के न्याय-युक्त कार्य भी अन्यायपूर्ण देखे तो यह कुल गर्व एवं बान्धव सहानुभूति न अपने लिए कल्याणकारी हो सकती है और न किसी दूसरे के लिए।''[14] आदित्यसेन अपना अन्तिम निर्णय सुनाता है कि मैं सिर्फ हर्ष वर्ध्दन वंश का नाश देखना चाहता हूँ। आप जो चाहते है वह करिए। यहाँ पर शैलबाला का ममत्व उभर आता है। आपका पुत्र, प्राणों से प्यारा, क्या आप उसे बंदी बनाकर कारावास में भेजेगें ऐसा अपने पति माधवगुप्त से कहती है। पिता-पुत्र के वार्तालाभ से शैलबाला मूर्च्छित हो जाती है।

शशांक नरेन्दगुप्त गौड का राजा और गुप्तचराधिपति इन दोनों में युध्द के वार्तालाप होते हैं। जो हर्ष के खिलाफ है, वह ब्राह्मण शशांक के पास आए हुए हैं। राज्यश्री सम्राज्ञी के और बौध्द धर्म के कट्टर विरोधक ब्राह्मण शशांक से मिल जाते हैं और उसका साथ देना

चाहते हैं। दक्षिण के युध्द में यहाँ पर हर्ष पहली बार पराजित हो गया है। इसी कारण हर्ष कमजोर और थोडासा निराश हुआ है। इस समय का शशांक फायदा उठाना चाहता है। नीति के अनुसार - '' शत्रु पर निर्बलता के अवसर पर आक्रमण किया जाय। मैंने आपसे कहा न कि मैं हृदय से नहीं, मस्तिष्क से शासित होता हूँ। अब हर्ष के विरूध्द विद्रोह का ठिक अवसर उपस्थित हुआ है। अब बौध्द-धर्म के मूलोच्छेदन और आर्य-धर्म की नीव दृढ करने का समय भी आ गया है। इतने वर्षो और युगों तक जिस घडी की प्रतीक्षा की, सौभाग्य से वह अब आ गयी है।''[15] नाटकीय संवादों के जरिए से शशांक, आदित्यसेन और ब्राह्मण सिर्फ हर्ष को मारने की योजनाएँ बनाते हैं।

चिनी यात्री यॉनचॉंग भारत भ्रमण के लिए आया है। प्राकृतिक और कृत्रिम दृष्टि से धर्म, जातपात अनेक होते हुए भी एकता का महत्व बताया है। शिक्षा, ज्ञान और कला की भी प्रशंसा करता है। भारतीय संस्कृति को और रूढिपरंपराओं का भी आदर यॉनचॉंग करता हैं। ''कान्यकुब्ज की तो सारी कीर्ति का श्रेय हमारी वर्तमान सम्राज्ञी राज्यश्री और महाराजधिराज हर्षवर्ध्दन को है महाशय।''[16]इस तरह प्रजा हर्ष के प्रति यॉनचॉंग को बताती है। कान्यकुब्ज और पुरे आर्यावर्त के वे दो आत्म-दाता देवता है। राजा और प्रजा में इतना अपार प्रेम यॉनचॉंग पहली बार देख रहा है। साथ ही साथ नालन्दा विश्वविद्यालय की शिक्षा, शशांक शत्रू के रूप में, ब्राह्मणों का विरोध इस की पूरी जानकारी यॉनचॉंग को प्रजा से मिलती है। यॉनचॉंग चीनी-यात्री यहाँ के लोगों को मिलकर बडा आनंदित होता हैं।

इसके बाद भण्डि और माधवगुप्त का प्रवेश होता है। दक्षिण में पराजय का सारा दोष माधवगुप्त के सर पर प्रजा रखती है। माधवगुप्त को जासूस प्रजा समजती है। लेकिन माधवगुप्त को हर्ष समजाते है और कहते है कि, ''राजा को दोष न देकर कर्मचारियों को दोष देना यह जनसमुदाय की रीत होती है।''[17] अब हम दूबारा पूरी तैयारी से दक्षिण पर आक्रमण करना है इसलिए हमें योजना बनानी है। इसलिए भण्डि को हर्ष बुलाता है। तब माधवगुप्त भण्डि से कहता है, ''जन-समुदाय का स्मृति-कोष बहुत ही छोटा होता है। वह नवीन बात को स्मरण रख सकता है, पुरानी बातों को नहीं।''[18] यहाँ पर आदर्श राजा हर्ष के प्रति माधवगुप्त का प्रेम देखने को मिलता है। देशभक्ति न्याय के पक्ष में खडा अपने पूत्र से

दुश्मनी मोल लेनेवाला और सम्पूर्ण जीवन स्वामीभक्ति में समर्पित करनेवाला, आदर्श मित्र के रूप में माधवगुप्त हमारे सामने आ जाते है।

माधवगुप्त और भण्डि में युध्द के बारे में चर्चा चल रही है। हर्ष और राज्यश्री दोनों बूढे हो गये हैं। दिन-रात राज्यश्री को एक ही चिंता सता रही है, मैं भारत में एक राष्ट्र की स्थापना की घोषणा की थी वह अभी तक मैं पूरी कर न सकी। हर्ष, माधवगुप्त और भण्डि भी इस बात से नाराज है। यॉनचॉंग भी अपना एक राष्ट्र, एक साम्राज्य के बारे में मत व्यक्त करता है। चीन, पारस और भारत इन तीन महान देशो में परस्पर मैत्री हो गयी तो जम्बूद्विप इसका पथ प्रदर्शन करेगा। यॉनचॉंग कहता है, ''जिसमें एक धर्म, दूसरी भाषा और दूसरे प्रकार के सामाजिक संगठनवालों को अपना शत्रु न समझकर मित्र समझें, एक-दूसरे का रक्तपात करने के इच्छुक न रहकर एक दूसरे को साहयता पहुँचाएँ और इस कार्य में सब अपना अपना स्वार्थ माने।''[19] प्रजाहित के लिए हर्ष राजा अपना सर्वस्व न्योछावर कर देता हैं। संसार के इतिहास में हर्ष जैसा राजा दूसरा हो ही नहीं सकता। राज्यश्री अपने भाई हर्ष के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती है। प्रजाहित दक्ष और सर्व गुणसंपन्न हर्ष का आदर्श चरित्र हमे देखने को मिलता है। नाट्क का तीसरा अंक राज्यश्री के कथन से समाप्त होता है।

चौथा अंक -

इस अंक का प्रारंभ ही बोधिवृक्ष को लेकर होता है। इस वृक्ष को घृणास्पद निगाहों से शशांक नरेन्द्रगुप्त और आदित्यसेन देख रहे हैं। इस वृक्ष ने ही इनको पनपने का सहारा दिया है और आज पूरे भारत देश पर बौध्द अनुयायी हर्ष राज्य कर रहा है। इस वृक्ष को उखाड देने से ही वर्ध्दनों का नाश होगा ऐसा क्रोधित होकर भिक्षुक को शशांक बोल रहे हैं। इस वृक्ष के कारण ही बौध्दों की उत्पत्ति हो गयी है और आज हमारे शत्रू बन गये हैं ऐसा शशांक कहता है। यहाँ पर दोनों मिलकर बोधिवृक्ष को काटते हैं।

इसके बाद महासेनापति भण्डि और माधवगुप्त में हर्ष के सर्वस्व दान के निश्चय को लेकर वार्तालाप होता है। माधवगुप्त महापुरूष के सिध्दान्तों का प्रतिपादन करके भण्डि के शंकाओं का समाधान करता है। आगे के दृश्य में शशांक, आदित्यसेन और ब्राह्मण हर्ष के हत्या का षड्यंत्र रचते हैं। यहाँ पर बौध्द गया (भवन), माधवगुप्त का भवन, प्रयाग का एक

भाग, यज्ञशाला का वर्णन दिखायी देता है। बौध्द धर्म का विरोध करते हुए शशांक कहता है, ''खींच लो इसकी जीभ और भर दो इसके मुँह में धूलि। आर्यधर्म के शत्रूओं ! अधर्मियों ! पामरों ! अभी क्या हुआ है, इस वृक्ष के पश्चात तुम सबकी यही दशा होगी, जो इस वृक्ष की हो रही है। इस पुण्यभूमि में शशांक नरेन्द्रगुप्त बौध्द-धर्म का चिन्ह तक न रहने देगा, चिन्ह तक नही।''[20]

आदित्यसेन कहता है कि तुम दुष्टों ने विदेशियों से मिलकर गुप्त साम्राज्य का नाश कराया है। अब तुम और तुम्हारी सत्ता थोडे ही दिन की मेहमान है। इस प्रकार सिर्फ वर्ध्दन साम्राज्य का नाश मैं करना चाहता हूँ। इस पर माधवगुप्त और भण्डि विचार कर रहे हैं। माधवगुप्त भण्डि से कहता है, ''मनुष्य जब पृथ्वी में किसी वस्तु का बीज बोता है, तब इस बात से निश्चित रहता है, न कि अमुक बीज से अमुक प्रकार का ही पौधा निकलेगा ?''[21] जिस प्रकार हम विचार करते हैं उसी प्रकार निष्पत्ति होती है।

मानव समाज पूर्ण रूप से किसी न किसी बन्धनो में जकडा हुआ है। विवाह का बन्धन हो या चाहे पुत्र बन्धन हो इसमें हमें ज्यादातर दु:ख ही मिलता है। माधवगुप्त अपने मित्र हर्ष के बारे में कहते हैं, ''जो भी महान पुरूष दिखे तथा जिसकी कृति में भी कम से कम स्वार्थ और अधिक से अधिक परार्थ एवं परमार्थ दृष्टिगोचर हो।''[22] यहाँ पर हर्ष का आदर्श चरित्र हमारे सामने देखने को मिलता है। महान पुरूषों का वर्तमान स्थिति में उपयोग नहीं होता बल्कि भविष्यकाल में निश्चित रूप में होता है। उनके कार्यो का मुनफा नयी दिशा दिखाने के लिए होता है। गुप्तचर का प्रवेश होता है। वह बुरा समाचार लेकर राजभवन में आता है। शशांक नरेन्द्रगुप्त और आदित्यसेन बोधिवृक्ष काँटने के पश्चात हर्ष की हत्या का षड्यंत्र रच रहे है। गुप्तचर का समाचार सुनकर सभी स्तब्ध रहते है। महासेनापति भण्डि हर्ष की चारित्रिक विशेषताएँ बताता हैं। ''पहले वह सिंहासन पर न बैठे, साधारण पुरुष के समान प्रजा सेवा करना चाहते थे, वह न हुआ और उन्हें सिंहासनासीन होना पडा। फिर उन्होंने सम्राज्ञी को सिंहासन पर बिठाया, महिलाओं का पुरूषों के सदृश अधिकार दिलाने की बात सोची पर आज भी पुरूष उच्च और महिलायें निम्न मानी जाती हैं। फिर उन्होंने स्वयं कान्यकुब्ज का माण्डलिक बनकर अपने उदाहरण द्वारा बिना युध्द के ही प्रत्येक देश को

साम्राज्य का समानाधिकारी बनाना चाहा। वह प्रयत्न भी असफल हुआ और उन्हें अनेक वर्ष नहीं, परंतु अनेक युग व्यतीत करने पडे। अब राज्यों की परस्पर मैत्री और युध्द के लिए धन-संग्रह के विरोध में स्वयं सर्वस्व दान देकर, अन्य नरेशों को इस दिशा में आकर्षित करने का प्रयोग कहाँ तक सफल होगा, सो तो पहले प्रयोगों से भी अधिक स्पष्ट है।''[23] इतना होने के बावजूद भी हर्ष महान पुरूष है। उनके हर एक कृति का फल अच्छा होता है। संसार में महान व्यक्ति महान कार्य करने ही आते है। इसलिए वह महापुरूष बन जाते हैं।

माधवगुप्त को गुप्तचर षड्यंत्र के बारे कहता है, ''यज्ञ के दिन जब जन समुदाय के बीच शरीर रक्षकों से रहित परमभट्टारक हर्ष शिव औंर बुध्द का पूजन कर सर्वस्व दान करेंगे उसी दिन यह कार्य करने के लिए शशांक और आदित्यसेन ने ब्राह्मणों को नियुक्त किया है।'' इस प्रकार अच्छे कार्य करनेवाले व्यक्ति भी इस समाज में नही रह पातें। क्योंकि हर्ष को भी अनेक दु:खों का सामना करना पडा है।

माधवगुप्त की स्थिति अत्यंत दयनीय दिखायी गयी है। एक ओर मित्रप्रेम और दूसरी ओर पुत्रप्रेम। लेकिन माधवगुप्त मित्रप्रेम जो सत्य की बुनियादी पर टिका हुआ है उसे ही मानता है। माधवगुप्त ने हर्ष का बाल्यावस्था से मदद की है। आज भी अनेक लोग मुझे बुरी दृष्टि से देखते है फिर भी मैंने कभी भी हर्षवर्ध्दन का साथ नहीं छोडा। भण्डि और माधवगुप्त हर्ष को बचाने के लिए एक योजना बनाते है लेकिन उसका पता हर्ष को नहीं चलने देते। भण्डि उनसे आमने-सामने युध्द करना तय करता है और माधवगुप्त वेशांतर रूप धारण करे वे भी एक प्रयाग के समय षड्यंत्र रचते हैं।

यहाँ पर यज्ञ की व्यवस्था और मूर्ति पूजन यज्ञशाला में किस प्रकार करना है इसका वर्णन यहाँ पर किया है। सारे आर्यावर्त की प्रजा, सारे धर्म संस्था और सभी माण्डलिक इस यज्ञ समारोह में आ रहे हैं। यज्ञ का दिन यह हर्ष के बडे खुशी का दिन है। आदित्यसेन के कारण माधवगुप्त पर सन्देह करना मुनासिब नहीं है। हर्ष कहता है वह मेरा सच्चा मित्र है। पुरवासियों का वार्तालाप हर्ष, माधवगुप्त और शशांक के प्रति चर्चा आपस में चल रही है। माधवगुप्त और भण्डि रंगमंच पर यज्ञशाला में नहीं हैं। यज्ञशाला में सभी अतिथियों का आगमन हुआ है। बुध्द, शिव और आदित्य की मूर्तियाँ रत्न-जडित शिलिका पर रखी हुई है।

सभी ओर यज्ञशाला में प्रसन्नता निर्माण हो गयी है। हर्ष समस्त कान्यकुब्ज के कोष का दान-संकल्प करते हैं। अंग पर के सारे आभूषण उतार देते है। हर्ष अपनी बहन सम्राज्ञी राज्यश्री से बिनती करते है और एक वस्त्र भिक्षा के रूप में माँगते है। सम्राज्ञी राज्यश्री अपने भाई हर्ष को आँखो में आँसू भरकर एक सादा वस्त्र देती है। यज्ञशाला परमभट्टारक महाराजाधिराज, राजर्षि 'हर्षवर्ध्दन की जय' आदि घोष से गुंज उठती है। इस प्रकार यहाँ हर्ष का उदात्त रूप हमारे सामने प्रस्तुत होता है।

इसी समय ब्राह्मणों में से एक ब्राह्मण एकाएक खडा होकर अधोवस्त्र में छिपी हुई छुरी निकालकर हर्षवर्ध्दन की ओर शीघ्रता से बढता है। सभी लोग आश्यर्चयकित हो जाते हैं। उसी समय सैनिक वेश में माधवगुप्त का प्रवेश होता है। उसी के साथ चार सैनिक आदित्यसेन को लोहे की श्रृंखलाओं से बांधे हुए लाते हैं। हर्ष को माधवगुप्त कहते हैं, ''परमभट्टारक की हत्या का षड्यंन्त्र। इसका पता पाकर आप से बिना कुछ कहे ही मुझे इस षड्यंन्त्र के नाश के लिए दूसरे षड्यंत्र की रचना कर आप के पास से जाने का बाध्य होना पडा।''[24] हर्ष संवेदनशील होने के कारण वह कभी हिंसा के मार्ग पर नहीं चले। यहाँ पर माधवगुप्त के मुख पर आत्याधिक उव्दिग्नता और आदित्यसेन के मुख पर अत्याधिक क्रोध दिखायी देता है। इकलौती सन्तान के प्यार की कुर्बानी माधवगुप्त देता है।

माधवगुप्त और भण्डि ने शशांक से युध्द किया। भण्डि ने शशांक को युध्द मे मार डाला और माधवगुप्त ने बन्दी बनाकर आपके सामने आदित्य को खडा किया है। ''मेरे युध्द त्याग देने पर भी तुम लोगों ने युध्द किया इन विद्रोहियों के हृदय-परिवर्तन की प्रतिक्षा नहीं की ?'' [25]माधवगुप्त अपने पुत्र को मृत्यू-दण्ड दिलाना चाहता है। शैलबाला फूट-फूट कर रोती है। शैलबाला ममत्व के रूप में दामन फैलाकर संतान की भिक्षा माँगती है। तब आदित्यसेन क्रोधित हो उठते है और मरते दम तक वह हर्ष से नफरत करते है, ''क्या, क्या कह रही है, माँ, क्या कह रही है। क्षत्राणी होकर भिक्षा। जो प्राण एक दिन जाना ही है, उसकी भिक्षा। शत्रु से भिक्षा। उत्तम होता, यदि मैं तेरे गर्भ में ही प्रवेश न करता। उत्तम होता, यदि मैं जन्मते ही मर जाता। मेरा इस लोक का जीवन तो समाप्त हो ही रहा है, पर मरते समय भी पिता के सदृश्य क्या माता का भी स्मरण कर मुझे तू गौरव का अनुभव न

करने देगी ? क्या माता का नाम लेकर भी यह आदित्यसेन सहर्ष अपने प्राण न दे सकेगा ?''[26] इस प्रकार आदित्यसेन अपने माता-पिता से नाराज होता है और हर्ष को ही अपना गौरव आपके हाथ है ऐसा कहता है।

आदित्यसेन के तरफ देखते हुए हर्ष स्मित हास्य करता है। हर्ष मुस्कुराते हुए आदित्यसेन के बारे में कहते है '' नवयुवक, तुम सच्चे नवयवुक हो। युवावस्था में जैसा तेज, जैसी उत्साह, जैसी निर्भीकता होनी चाहिए वैसी ही तुम में है। परन्तु देखो, तुम्हारे ये सदगुण तुम्हारे एक विवेकहीन विश्वास के कारण तुम्हे ठीक पथ पर न चलाकर पथ-भ्रष्ट कर रहे हैं, आदित्यसेन।''[27] हर्ष किसी वंश, विशिष्ट धर्म से, जाति से प्यार नहीं करते बल्कि इस विशाल विश्व को एक संसार मानते हैं। आदित्यसेन का भी हर्ष हृदय परिवर्तन करके उसके अच्छे गुणों का ही गुणगान करता है।

आदित्यसेन किसी को भी अभिवादन न करते हुए विचार मग्न अवस्था में चला जाता है। इसी समय कुछ दूरी पर मंडप को आग लग जाती है। तब माधवगुप्त हर्ष से कहता है, ''जान तो यही पडता है, परमभट्टारक, परन्तु चिन्ता नहीं, इसके बुझाने का अभी प्रबन्ध करता हूँ। इस अग्नि के साथ आर्यावर्ती के साम्राज्य के प्रति विद्रोहियों की अग्नि भी सदा के लिए शान्त हो जायेगी।''[28] माधवगुप्त अंत तक हर्ष को अपने प्राणों से ज्यादा प्रेम देता है इसके उपलक्ष्य में कभी कुछ नहीं माँगता। निस्वार्थ भित्रप्रेम इन दोनों में उपर्युक्त संवादों के जरिए से हमें देखने को मिलता है।

इस प्रकार 'हर्ष' नाटक का प्रारंभ स्थाण्वीश्वर के सुने सिंहासन से होता है, और अन्त हर्ष के प्रयाग आकर दान वितरण समारोह से होता है। नाटक का चौथा अंक और हर्ष नाटक यहाँ पर समाप्त होता है।

निष्कर्ष :-

'हर्ष' एक सुचिंतित रचना है। नाटक ऐतिहासिक होते हुए भी यह आधुनिक व्यवहारोपयोगी और राजनीतिक परिस्थिति का ज्ञापक है। भारत एक और अखण्ड है, साथ ही साथ एक प्रजातंत्र का द्योतक है ऐसा दिखाया है। भारतीय गौरव की रक्षा करनेवाला, आदर्शवादी, राष्ट्रीय एकात्मता, सांस्कृतिक मूल्यों की प्रतिस्थापना, नैतिकता और सर्वधर्म

समभाव की भावना प्रस्थापित करना 'हर्ष' नाटक का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। इस नाटक में पर्याप्त प्रतिभा, मौलिकता और रोचकता दिखायी देती है। 'हर्ष' नाटक में पहले अंक से अंतिम अंक तक संघर्ष दिखायी देता है। कथावस्तु की योजना सुसंगठित और शृखंलाबध्द हैं।

पहले अंक में सिंहासन ग्रहण की समस्या, माधवगुप्त के कहने पर शिलादित्य सिंहासन ग्रहण करना, दो बातों का वचन लेना, शिलादित्य का निस्वार्थ प्रजाहित और राज्यश्री के मिलने के पश्चात शिलादित्य आनंदित हो उठता है। यहाँ पर वर्ध्दन वंश का उत्थान हो रहा है। हर्ष आदर्श का प्रतीक है, माधवगुप्त सच्चे मित्र के रूप में, सम्राज्ञी राज्यश्री प्रमुख नारी के रूप में, शशांक और आदित्य खलनायक के रूप में हमें दिखायी देते हैं। 'हर्ष' नाटक में प्रमुख पुरूष पात्र के रूप में शिलादित्य और नारी पात्र के रूप में राज्यश्री दिखायी देती है।

द्वितीय अंक में शशांक, आदित्यसेन और कुछ विरोधी ब्राह्मण हर्ष के प्रति षड्यंत्र रच रहे है। राज्यश्री को हर्ष सम्राज्ञी बनाता है। तीसरे अंक में माधवगुप्त का हर्ष के प्रति मित्रप्रेम दिखाया गया है। चीनी यात्री का वर्णन, माधवगुप्त और आदित्यसेन का संघर्ष, और समस्त राजा को एकत्रित करने की राज्यश्री की चिंता का वर्णन दिखायी देता है। चौथे अंक में बौध्द धर्म और ब्राह्मण धर्म के संघर्ष का वर्णन दिखायी देता है। माधवगुप्त और भण्डि शशांक से युध्द करते हैं। शशांक का युध्द में मारा जाना, आदित्य को पकडकर लाना और आदर्श हर्ष राजा की विशेषताओं का वर्णन इस चौथे और अंतिम अंक में दिखायी देता हैं।

निष्कर्षत: आदर्श राजा और आदर्श प्रशासक, स्त्री-पुरूष समानता का द्योतक, दृढनिश्चयी, शांतताप्रिय और विवेकशील राजा, निस्वार्थ और उदात्त चरित्र, बुध्द भगवान से प्रभावित और बुध्द का अनुयायी, स्वाभिमानी और त्यागी वृत्ति, देशभक्त और मैत्री में विश्वास रखनेवाले महापुरूष के नाम से 'हर्ष' को पहचाना जाता है। इस नाटक में आदर्श राज्य, सार्वजनिक हित और राज्यों के परस्पर मैत्री के सिध्दातों का प्रतिपादन किया गया है।

2.3 'शशिगुप्त' नाटक का सामान्य परिचय :-

'शशिगुप्त' नाटक १९४२ में प्रकाशित हुआ। इस नाटक में प्रमुख रूप से दो बाते हमें देखने को मिलती हैं।

१. नविन ऐतिहासिक खोजों के आधार पर चाणक्य की दूरदर्शिता और राष्ट्रभक्ति।

२. समग्र भारत को एकता के सूत्र में पिरोना है। शशिगुप्त नाटक में यूनान सम्राट सिकन्दर के भारत पर आक्रमण बार-बार होते थे। इसका प्रतिरोध अश्वक जाति के सरदार शशिगुप्त करते थे। आम्भीक राजा सिकन्दर से मिला था वह देशद्रोही के रूप में उसका चित्रण यहाँ पर किया है। चाणक्य को शशिगुप्त गुरू मानता है। वास्तव में 'शशिगुप्त' नाटक मौलिक है, हर दिशा में नवीन है। नयी खोजों और नये ऐतिहासिक दृष्टिकोण पर यह नाटक आधारित है। इसके अतिरिक्त प्राचीन युरोपीय इतिहासकार के सिकन्दर सम्बन्धी वृतान्तों और साथ ही बृहत कथा तथा मुद्राराक्षस में सुरक्षित चाणक्य और चन्द्रगुप्त सम्बन्धी दन्त कथाओं का भी इस नाटक में बडी कुशलता से प्रयोग किया गया है। इस प्रकार शशिगुप्त नाटक का मूल लक्ष्य समस्त भारत देश को एकता के सूत्र में पिरोना, एक राष्ट्र, एक साम्राज्य की स्थापना करना है। इसका चित्रण उनके नाटकों के माध्यम से हमें देखने मिलता है।

पहला अंक :-

शशिगुप्त नाटक मौर्य काल से सम्बन्धित है। प्रथम अंक का प्रारंभ ही शशिगुप्त और चाणक्य के एकता के वार्तालाप से होता है। शशिगुप्त नाटक के प्रथम अंक में कुल मिलाकर पाँच दृश्य है। सभी दृश्यों में अलग-अलग स्थान और समय का वर्णन किया है। वे दोनों यहाँ बैठकर भारत के समस्त नरपति गण तथा गणतंत्र यदि एक हो जायें तो कोई भी आक्रमण नहीं कर सकता। ऐसा चाणक्य शशिगुप्त को बताता है। चाणक्य बुध्दिमान, तेजस्वी, दृढता और गंभीरता का प्रतीक है। वह दिखने में कुरूप जरूर है लेकिन दूरदर्शिता और देशभक्त है। शशिगुप्त आज्ञाकारी शिष्य और आदर्श राजा के रूप में हमारे सामने आ जाते हैं।

इसके बाद शशिगुप्त इतना ही सोचता है कि पुरा भारत वर्ष एक दिन एकत्रित आ जायेगा और अखंड भारत का नक्शा देखने को मिलेगा। अगर फिर भी परकीय आक्रमण

होंगे तो उसका हम नाश करेंगे। शशिगुप्त के गुरू चाणक्य हैं। तक्षशिला का राजा जो आम्भीक है वह सिकन्दर से मिला है। देशद्रोही आम्भीक को सर्वप्रथम शशिगुप्त को खत्म कर देना चाहता है। उसके बाद यवनों से हम युध्द करेंगे। मगध का राजा नन्द और पंचनद देश का राजा पर्वतक ही इस समर्थ के आर्यावर्त के शक्तिशाली नरपति है।

यूनान का राजा सिकन्दर यूनान से लेकर समस्त देशों के नरेशों के राजमुकुटों को फूलों के सदृश तोडता हुआ सिकन्दर आगे ही बढता जा रहा है। चाणक्य अपने कूटनीति से शशिगुप्त को कहता है, तुम्हें वर्तमान युध्द का अन्त कर यूनान सम्राट सिकन्दर का क्षत्रण बनना होगा। यही एक राजमार्ग हमारे देश की स्वाधीनता को बचाने के लिए बचा है। सही समय आने पर सिकन्दर से हम विद्रोह करेंगें। शशिगुप्त चाणक्य की आज्ञा को अपना कर्तव्य धर्म समजता है और निभाता है। चाणक्य शशिगुप्त को कहते है, " वत्स, इस समय आर्यावर्त में तुमसे अधिक वीर, तुमसे अधिक साहसी, तुमसे अधिक आदर्शवादी,तुमसे अधिक देशभक्त, तुमसे अधिक शुध्द अत:करण और आचरण वाला और कोई व्यक्ति नहीं। तुम्ही यूनानियों को इस देश से निकाल इस देश में एक साम्राज्य की स्थापना कर सकते हो, उसके चक्रवर्ती सम्राट हो सकते है। तुम्हारी जीत इस देश की संसार का पुन: सर्वश्रेष्ठ देश बना सकती है और तुम्हारी हार इसे शताब्दियों के लिए दास। "[29] शशिगुप्त सर झुकाकर चाणक्य के आज्ञा का पालन करता है।

इसके बाद सिल्यूकस सिकन्दर यूनान सम्राट का सेनापति रहता है, उसकी कन्या हेलन का वर्णन हमें देखने को मिलता है। हेलन की अवस्था अठारह वर्ष की है। वह अत्यन्त सुन्दर युवती है। हेलन को गाने का बडा शोक है। कबुतर के गले में चिठ्ठी बांधकर वह यूनान भेजती है। हेलन आर्यवर्त्त में रहती है और यहाँ के सैनिकों की शूर वीरता का गौरव करती है।

सैनिकों के साथ हेलन देवी ऐथना का गाना गाती है। जो युध्द का प्रेरणादायी माना जाता है। आम्भीक तक्षशिला का राजा यूनान सम्राट सिकन्दर का विश्वविजेता का महानता का वर्णन कर रहा है। इसका बडा क्रोध शशिगुप्त को आता है। तक्षशिला के सभाभवन का वर्णन यहाँ पर किया है। सारे सभा भवन में सबसे अधिक सुन्दर और तेजस्वी शशिगुप्त है

और सबसे अधिक कुरूप और भयानक चाणक्य हैं। आम्भीक के तक्षशिला भवन यूनान सम्राट सिकन्दर का आगमन हुआ हैं। विश्वविजेता के रूप में सिकन्दर विराजमान गद्दी पर होता है। महान विश्वविजेता,यूनान-सम्राट सिकन्दर के पवित्र दर्शन हमें आज प्राप्त हुए है और आर्यावर्त हमारे मित्र अश्वक जाति के अधिपति शशिगुप्त ने भी शरणागति ली है। अंत में आम्भीक कहता है, ''यह अपने को, अपने पूर्वजों को, अपने कुल को और अपने देश को मैं सौभाग्यशाली मानता हूँ।''[30] इतना गुणगान गाकर आम्भीक व्यासपीठ पर से नीचे उतरकर सिकन्दर के पास जाता है। यह सुनते ही फौरन शशिगुप्त क्रोधित होकर आम्भीक की ओर देखता हे लेकिन चाणक्य की दृष्टि उसकी ओर पडती है और शशिगुप्त आसन गृहण करता है। चाणक्य के कहने पर शशिगुप्त बडा दु:खी होकर शरणागती सिकन्दर की स्विकारता है और सिकन्दर के सामने सर झुकाता है।

हेलन और सिल्यूकस के वार्तालापों से चौथे दृश्य का प्रारंभ होता है। इन दोनों में विवाह की बात को लेकर विचार विमर्श होता रहता है। हेलन को सिल्यूकस पूछता है, अपने जीवन साथी की परख की क्षमता क्या आप में है ? तब हेलन बडे उत्साह भरे स्वर में कहती है कि मैं अभी बच्ची नहीं हूँ। यवनों में सिर्फ शशिगुप्त से मैं विवाह करूंगी। आज तक मैंने सिर्फ उसे ही चाहा है और उससे मैं विवाह करूँगी। तब सिल्यूकस कहता है शशिगुप्त तो देशद्रोही है वह सिकन्दर से मिला हुआ है। देशभक्त देशद्रोही से कैसे विवाह कर सकता है ? यह सुनते ही हेलन देश के लिए अपने प्यार को कुर्बान देती है। '' आप ठीक कहते हैं, पिताजी, देशभक्त देशद्रोही से विवाह नहीं हो सकता। पूर्णिमा और अमावशा में प्रेम संभव नहीं। दिन और रात का सम्बन्ध कैसा ? मैं देशभक्त, शशिगुप्त देशद्रोही। आकाश और पाताल कैसे मिल सकते हैं ? आपने ठीक कहा, पिताजी, बच्ची हूँ। मेरी रूचि अभी परिष्कृत नहीं हुई। मुझ में परख करने को क्षमता नहीं।''[31] यहाँ पर हमें हेलन का स्वाभिमान, देशभक्ति के लिए अपने प्यार को कुर्बान देती है और आदर्श नारी के प्रतिनिधित्व के रूप में हमारे सामने आ जाती है। दूसरी तरफआम्भीक तक्षशिला का राजा हेलन से मोर भेट वस्तु देकर प्रेम भावना व्यक्त करता है तब हेलन उसे इन्कारती है। पहले अंक के पाँचवे दृश्य में शशिगुप्त को चाणक्य के कहने पर सिकन्दर के सामने सर झुकाना पडा,

अपमानास्पद स्थिति का वर्णन यहाँ पर दिखायी देता है। ग्लानि और क्रोध से मानसिक स्थिति का वर्णन यहाँ पर दिखायी देता है। वहाँ पर सभी और विश्वविजेता सिकन्दर यूनान-सम्राट की जय, आम्भीक का भाषण और प्रजा के नजरों में गिरना तथा विदेशीयों का गौरव देखकर मेरा शरीर ज्वालामुखी की तरह उद्दीपत हो उठा था। लेकिन चाणक्य आपको सामने देखकर मैं चुपचाप अपने अपमान को पीता रहा।

चाणक्य अपने शिष्य शशिगुप्त को हेलन से प्रेम न करने का एक महाभयानक निर्णय सुनाते हैं। शशिगुप्त यह सुनकर हक्का-बक्का सा रह जाता है। चाणक्य कहता है कि हर एक यवन हमारा शत्रू है ? चाहे वहाँ पर हेलन क्यों नही ? सिकन्दर से भी बडा शत्रू सिल्यूकस है। हमें परतंत्र भूमि को स्वतंत्र बनाना है और एक साम्राज्य की स्थापना करनी है। हमारा प्यारा भारत देश इतना सशक्त बनाना है कि कोई भी यूनान हमारी ओर आँख उठाकर देखने की कोशिश भी न करें ? इस प्रकार शशिगुप्त को चाणक्य अपने परम कर्तव्य की याद दिलाते है। आदर्श गुरू और दूरदृष्टि के रूप में सच्चा पथ-प्रदर्शक चाणक्य करता है। यूनान से यहाँ पर शरणागती लेकर समय विद्रोह करने की योजना चाणक्य बनाता है। यहाँ पर चाणक्य और शशिगुप्त का देशप्रेम दिखायी देता है और प्रथम अंक समाप्त होता है।

द्वितीय अंक :-

दूसरे अंक की शुरूआत मगध का राजा नन्द और नन्द का मन्त्री राक्षस के वार्तालाप से होता है। आर्यावर्त में शक्तिशाली राजा के रूप में नन्द का स्थान महत्वपूर्ण है। नन्द विलासपूर्ण जीवन और नर्तकियों के गान में हमेशा रममान रहता है। कभी भी वह प्रजा की चिंता नहीं करता हमेशा नर्तकियाँ उसके इर्द-गिर्द रहती है। नन्द का सेनापति राक्षस सच्चा देशभक्त और अपने स्वामी के प्रति एकनिष्ठ रहता है। एक बार राक्षस मगध राज्य में क्या चल रहा है इसका समाचार नन्द को देने जाता है। तब नन्द महाराज बडी कठिनाई से लाख मिन्नत करने पर उन्हें दर्शन देते है । राक्षस कहता है अलक्षेन्द्र (सिकन्दर) सेना-सहित पर्वतक पर आक्रमण के लिए चल पडा है। यह सुनने के बाद भी अपमानित करके राक्षस सेनापति को नन्द जाओ ऐसा कहकर भेज देता है।

राजा पवर्तक पंचनद देश का राजा रहता है। प्रजा के मन में आदरयुक्त भावना है। पर्वतक और सिकन्दर के युध्द के बारे में प्रजा अपने अपने विचार प्रस्तुत कर रहे हैं। दस-ग्यारह लोग एकत्रित बैठकर आपस में विचार-विनिमय कर रहे है। पर्वतक की हार या सिकन्दर जो यूनान सम्राट की हार इसके बारे में अनेक निष्कर्ष प्रजा निकाल रही है। उस वक्त आर्यावर्त्त वीरभद्र के गाने से युध्द की प्रेरणा सैनिकों को मिलती है। पर्वतक और सिकन्दर का युध्द होता है। युध्द होने के पश्चात युध्द भूमी का महाभयानक वर्णन यहाँ पर दिखायी देता है। तक्षशिला का राजा आम्भीक पर्वतक को सिकन्दर के पैरों मे गिरने का संकेत करता है और युध्द बन्द हो जाता है। इसी समय सन्धि का प्रस्ताव दोनों में होता है।

इसके बारे में शशिगुप्त और चाणक्य दोनों यहाँ पर विचार करते हुए बैठे हैं। पर्वतक और सिकन्दर दोनों मिलकर मगध पर आक्रमण करनेवाले हैं। मगध राज्य का विजय याने भारत की विजय। दोनों के कुछ समज में नहीं आ रहा है। हमें सिकन्दर को किसी भी हालत में रोकना होगा इसलिए पवर्तक के मन में देशभक्ति भावना को बढावा देना चाहिए। सिकन्दर की पंचनद में हार होने से वह बहुत नाराज है। चाणक्य कहता है जिस समय की मैं प्रतिक्षा कर रहा था वह समय अब आ गया है। इतने जल्द आ जायेगा ऐसा मुझे लगा नहीं था। "हम यदि सिकन्दर को इस देश से निकालना चाहते हैं तो उसके मगध विजय के पूर्व ही उसे निकालना होगा। आज मगध-विजय का अर्थ भारत-विजय होता है।"[32] इस प्रकार चणक्य शशिगुप्त को बताते है बाद में शशिगुप्त युध्द का शंख फुंकते हैं और चाणक्य उसे सहमती देते है।

सिकन्दर और पर्वतक में युध्द के पश्चात मैत्री प्रस्थापित होती है। सिकन्दर कहता है यह हमारी मैत्री याने भारत और यूनान की, पूर्व और पश्चिम दिशा की मैत्री है। बातों बातों में पर्वतक यूनान सम्राट सिकन्दर से कहता है कि मैं तुम्हे सारे जम्बूद्विप का सम्राट देखना चाहता हूँ। दोनों आसन्दी पर बैठे रहते हैं। वहाँ पर हेलन गाते हुए आती है। हेलन को देखते ही पर्वतक महाराज बेकाबू हो जाते हैं और उससे प्यार करने लगते हैं। पर्वतक हेलन के बारे में जानकारी हासिल करते है। सिकन्दर कहता है "पहले उसने निर्णय लिया था कि वह विवाह न करेगी, फिर एकाएक तक्षशिला में अपने पिता से कह बैठी कि शशिगुप्त से

विवाह करूँगी। अब सुना है शशिगुप्त से घोर घृणा करती है।''[33] इस प्रकार सिकन्दर पवर्तक को बता देता है। हेलन देशभक्त नारी है वह मेरे प्रमुख सेनापति सिल्यूकस की बेटी है। इस बात को छोडकर मैंने आपके लिए ईरान और यूनान से, हेलन से भी अधिक सुंदर रमनियों के झुण्ड भेज देता हूँ। दोनों मगध के राजा नन्द की विलासपूर्ण जिन्दगी और मन्त्री राक्षस की देशभक्ति के बारे में चर्चा करते है।

पर्वतक नन्द की विलासप्रिय जिन्दगी के बारे में सिकन्दर से कहता है ''सूर्य कब उदय होता है और कब अस्त इसका पता भी नहीं रहता। नर्तकियाँ, मदिरा और सिर्फ मनोरंजन चाहिए। नन्द को इन दो वस्तुओं के अलावा कुछ नहीं चाहिए।''[34]

नन्द का मन्त्री राक्षस एक देशभक्त और सच्चे सेवक के रूप में हमारे सामने आ जाता है। मगध देश के लिए अपने प्राणों की बली देनेवाला सच्चा युवक माना गया है। मगध राज्य पर आक्रमण करने पर्वतक और सिकन्दर आ रहे हैं। पर्वतक मगध के धन दौलत और विलासप्रिय राजा नन्द, मन्त्री राक्षस के बारे में सारी जानकारी देता है। हेलन नेपथ्य में गाना गाते हुए आती है। उसी वक्त सिल्यूकस का प्रवेश होता है और वह सूचना पर्वतक सिकन्दर को सुनाता है ''सम्राट-अभी-अभी उत्तरापथ से सुचना मिली है कि शशिगुप्त ने विप्लव किया है।''[35] सिकन्दर यह सुनते ही अत्यधिक क्रोधित हो उठता है। सिल्यूकस कहता है इतना ही नहीं हमारे प्रतिनिधि निकैनोर का वध भी कर डाला है। यह वार्ता सुनकर हेलन बहुत आनंदित हो उठती है और अपने पिताजी सिल्यूकस के गले मिलती है।

सिकन्दर यह सुनकर बडा क्रोधित हो उठा है वह कहता है, ''इस शशिगुप्त का काल उसके सिर पर नाच रहा है। उत्तरापथ में अश्वकों के युध्द में यह परास्त हो ही रहा था, परन्तु कुछ समय तक और जीना कदाचित इसके भाग्य में बदा था। वह मेरी शरण आया और बच गया। इतना ही नहीं अनारस का अधिपति हो गया। इस बार उसकी बोटी-बोटी काँटी जायेगी। ऐसी बुरी मौत मरवाउँगा कि किसी को न मरवाया होगा।''[36] यहाँ पर शशिगुप्त का फौरन वध करना ही सिकन्दर सोचता है। हेलन कहती है कि महाराज पर्वतक के युध्द करने के पश्चात भी यदि आप इनसे सन्धि कर सकते थे, इन्हें इतना बडा मित्र बना

सकते थे, तो क्या शशिगुप्त शशिगुप्त नहीं बन सकता था। सिकन्दर हेलन को मूर्ख लडकी कहकर क्रोधित हो उठता है।

निष्कर्षत: द्वितिय अंक का प्रारंभ मगध का विलासप्रिय राजा नंन्द से होता है और अंत यूनान सम्राट सिकन्दर के मन में शशिगुप्त के प्रति नफरत से होती है।

तीसरा अंक :-

तीसरे अंक का प्रारंभ पाटलिपुत्र नगर में नन्द के महल में नन्द मगध का विलासप्रिय,नर्तिकियों मे रममान होनेवाला राजा और सेनापति राक्षस जो देशभक्त है, इन दोनों में संघर्ष का वर्णन यहाँ पर किया है। होली के दिन और उत्सव का वर्णन यहाँ पर दिखायी दे रहा हैं। सभीं नर्तकियाँ नन्द को बीच में लेकर रंग लगा रही है। नन्द महाराज देर तक राक्षस की बातों पर ध्यान ही नहीं देते। लेकिन राक्षस मन्त्री आज निश्चय करके आए है , "महाराज। महिनों से प्रयत्न कर रहा हूँ कि आपके दर्शन कर आपसे कुछ कहूँ, परन्तु एक तो दर्शन दुर्लभ, फिर यदि दर्शन हो जाएँ तो आपका स्वास्थ मिलना असम्भव।"[37] इतना बताने पर थोडा सा ध्यान नन्द राक्षस की ओर देता है। राक्षस मन्त्री कहता है आपका राज्य नष्ट होनेवाला है। सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण किया है। तब यूनान याने क्या और सिकन्दर कौन है ? यह नन्द पूछ ता है। आम्भीक देशद्रोही निकला है। पर्वतक राजा ने सिकन्दर से संधि की और वे दोनों मिलकर अब मगध पर आक्रमण करने की योजना बनाते है । इतना कहने पर भी नन्द मन्त्री को डाँटता है और नर्तकियों को बुलाकर मनोंरजन में मग्न हो जाता है।

इतना बताने के बाद भी नन्द राजा में कुछ परिवर्तन नहीं होता। तब राक्षस दु:खी, नाराज होकर कहता है कि एकदिन आपका नाश जरूर है। यह सुनते ही नन्द क्रोधित हो उठता है और कहता है तुम्हें मैं अभी निकाल सकता हूँ , तुम मेरे सिर्फ आज्ञा का पालन करो। इसलिए, मै स्तब्ध रहता हूँ , मेरे पिताजी के समय के मन्त्री हो इसका तुम ज्यादा फायदा मत उठाओ। यह कहकर राक्षस मन्त्री को डॉटता है। एक भारतीय सैनिक के साथ चाणक्य का प्रवेश होता है। चाणक्य भारतीय सैनिकों का मनोबल बडा रहा है। चाणक्य कहता है, "देखो, सैनिक, तुम भारतीय हो। आर्यावर्त की गौरव-रक्षा का उत्तर दायित्व

केवल यहाँ के नरेशों पर ही नहीं, एक-एक व्यक्ति पर है। किसी भी साधन द्वारा विदेशियों को देश से बाहर कर देना, उनके एक एक चिहन तक का यहाँ नाश कर डालना , यह तुम सबका प्रथम कर्तव्य, परम धर्म है। शशिगुप्त का उत्तरापथ का कार्य तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक तुम यहाँ से भी शत्रूओं के पैर न उखाड दो।''[38] सभी सैनिक मिलकर कहते हैं जो कार्य हम पर आपने सौंपा है उसको सफल करने में हम हमारी प्राणों की बाजी देंगे, लेकिन पीछे नहीं हटेंगे। सैनिक शशिगुप्त के शूर, वीर और देशभक्ति का गुणगान गाते है। विपाशा के घने जंगल में सभी सैनिक जा रहे है। सैनिक तय करते है कि मगध के धन दौलत से ज्यादा हमारे प्राण प्यारे है। अब हम आगे नहीं बढेंगे। उसी दौरान नेपथ्य से गान की ध्वनि सुन पडती है। हेलन गाते हुए पतंग उडा रही है। वह पतंग आकाश मार्ग से यूनान भेज रही है। यहाँ का समाचार पत्रों द्वारा हेलन यूनान भेज रही है। मेरे आर्यावर्त में रहकर शशिगुप्त के साथ विवाह करने का निर्णय भी मैंने पत्रो द्वारा लिखा है ऐसा सैनिकों से कहती है।

रेगिस्तान का महाभयानक वर्णन यहाँ किया है। सैनिकों को प्यास लगी है और पानी पिने के लिए भी नहीं है। जिधर देखो उधर सिर्फ रेती के ढेर दिखायी देते है। जमीन पर चारों तरफउष्ण रेती नजर आती है। जब तक हमारे शरीर में प्राण है तब तक हम देशभक्ति परक रहेंगे। यहाँ पर यवन सैनिकों की हालत बहुत ही दयनीय हो गयी है। वह कहते हैं यह बहुत ही विचित्र देश है। जब हम पहली बार आये थे तब वनों से डरे थे, वृक्षों से और नदी के प्रवाह से घबरा गए थे। अब तो चारों तरफ रेती ही रेती है। जिस प्रकार पानी के बिना मछली तडपती है उसी प्रकार की हालत सैनिकों की हो गयी है। उसमें से घबराकर एक सैनिक कहता है ''करना क्या मरना। सुना नहीं, इस महस्थल में भी शशिगुप्त पहुँच सकेगा।''[39] ऐसा सैनिक कहता है। एक भी यवन यूनान न पहुँच सकेगा ऐसा सैनिक कहता है। हेलन दो सैनिकों के साथ उस रेगिस्तान में मटके में पानी लेकर उन्हें पिलाती है। वहॉ पर सैनिक वेश में सिल्यूकस तबीयत के बारे में पूछता है। तब हेलन पिताजी से कहती है स्त्रीयों का परमधर्म होता है दूसरों को सुखी रखना और स्वयं दु:खी रहना। तब पिताजी को भारत सीमा तक पहुँचाने हेलन यहाँ पर आयी है। राजराजेश्वर के बारे में भी हेलन पूछताछ करती

है। हेलन पिताजी को दु:खित होकर बिदा कर रही है। उसी वक्त शशिगुप्त कुछ भारतीय सैनिकों के जरिए युध्द करता है। घृणा से हेलन शशिगुप्त से कहती है, "हाँ, मारो शशिगुप्त मारो, तुमने तो एक - एक यवन का घर लौटते हुए यवन का भी वध करने का संकल्प किया है न। मारो, मारो शशिगुप्त मारो।"[40] इस प्रकार हेलन अपने पूर्व निश्चय पर स्थित रहती है, वह कुमारी ही रहना चाहती है। शशिगुप्त और सिल्यूकस का युध्द होता है। सिल्यूकस का खंजीर टूटता है, भागते हुए हेलन दोनों के बीच खडी हो जाती है।

इस प्रकार तीसरे अंक का प्रारंभ नन्द के विलास प्रिय जीवन से होता है और अंक का अंत हेलन और शशिगुप्त के वादविवाद से होता है।

चौथा अंक :-

चौथे अंक का प्रारंभ चाणक्य और पर्वतक युध्द की स्थिति को लेकर बाते कर रहे हैं। चाणक्य की बुध्दि और शशिगुप्त की वीरता के कारण अलक्षेन्द्र जैसे महान योध्दा को इस हमारे मुल्क से बाहर निकालना मुमकिन हो गया। ये सब विदेशी दुबारा मिलकर हम पर आक्रमण करेंगे ऐसा चाणक्य कहता है। शशिगुप्त का सार्वजनिक स्वागत किया जाता है। पिथान जो सिकन्दर का सिन्ध क्षत्रय का यहाँ पर प्रवेश हो जाता है। पर्वतक मगध आक्रमण की तैयारी जोरों से कर रहा है। सिल्यूकस की बिना साहय्यता से ही मगध पर स्वयं आक्रमण करके पर्वतक सफल होता है ऐसा कहता है। पर्वतक कहता है मगध देश नन्द के विलासी होंगे तथा उनकी क्रूरताओं के कारण मगध की प्रजा अत्यन्त व्याकुल हो उठी है। उसके राज्य का अन्त तो अविलंब करना होगा। पिथान कहता है कि विद्रोही शशिगुप्त और सम्राट अलक्षेन्द्र दोनों से आपकी मैत्री न चलेगी, क्योंकि सिकन्दर ने शशिगुप्त का नाश करने की प्रतिज्ञा की है। सम्राट सिकन्दर को यह मालूम हो गया तो सभी अनर्थ हो जायेगा ऐसा पिथान कहता है। यह सुनते ही पर्वतक क्रोधित हो उठता है, "पंचनद नरेश को क्या करना चाहिए और क्या नहीं, इसे वह भली भाँति जानता है।"[41] यहाँ पर पर्वतक के अंतर मन में निर्माण होनेवाली शंकाओं का निर्मूलन किया है। पिथान को अतिथि महल में ले जाने को प्रतिहार से शशिगुप्त कहते हैं।

बैबीलोन सम्राट का डेरा बहुत ही बडा है। हेलन आसन्दी पर बैठकर भारत वर्ष के आक्रमण का वर्णन कर रही है। भारत का आक्रमण हर दृष्टि से असफल हुआ है। गंन्धारों ने मेरे पैर घायल किए , मल्लो ने मेरा वक्ष:स्थल, जिसका घाव आजतक नहीं भरा है। परंन्तु कुमारी एक दृष्टिसे मेरी भारत यात्रा सफल भी हुई। आर्य और बौध्द संतो ने मुझे इस संसार की असारता का ज्ञान करा दिया है। हेलन सिकन्दर से कहती है कि आप भारत पर दुबारा शीघ्रता से शीघ्र आक्रमण करने का निर्णय लिया होगा। हेलन सिकन्दर से कहती है, "विशेषकर भारत का मानचित्र सदा अपने पास ही रखते हैं। उसी को देखना, सारे संसार को जीतकर उसका सम्राट किस प्रकार बना जाय, यही आपके दिवस की चिन्ता और रात्रि का स्वप्न है।"[42] सिकन्दर पर एक भारतीय साधू (चाणक्य) की भविष्यवाणी का भी गहरा प्रभाव पड जाता है। सिकन्दर और हेलन में बीते हुए जीवन के बारे में बाते होती हैं। सम्राट मैं इस संसार में मै किसी से भी प्रेम नहीं करती और किसी का द्वेष भी नहीं कर सकती।

सिकन्दर, सिल्यूकस और पिथान में भारत की राजनीतिक स्थिति पर बाते हो रही है। सिकन्दर की तबीयत ठीक नहीं है। पिथान ने भारत से समाचार लाया है। पिथान कहता अब शशिगुप्त और पर्वतक दोनों में मैत्री हो गयी है और दोनों मिलकर मगध पर आक्रमण करनेवाले है। यह समाचार सुनते ही सिकन्दर लाल - पिला हो जाता है। शशिगुप्त का वध और भारत विजय के स्वप्न से सिकन्दर बेचैन हो जाता है। सिकन्दर बूढा होने के कारण उसकी तबीयत और यह समाचार सुनकर और भी बिघड जाती है। अपने सेनापति सिल्यूकस का हाथ अपने हाथ में लेकर उससे वचन सिकन्दर लेता है। सिकन्दर अंतिम श्वास गिन रहा है , तब कहता है जब तक शशिगुप्त का वध नहीं होता, तब तक मेरी आत्मा को शांति नहीं मिलेगी। अंत में सिकन्दर की मौत होती है।

मगध का निर्वासित - राज कर्मचारी, शकट्‌ार, चाणक्य और राक्षस इनके कथनों से प्रारंभ होता है। बारह वर्ष के बाद राक्षस और शकट्‌ार मिल रहे है। बीती हुई जिंदगी के बारे में दोनों में वार्तालाप होता रहता है। बातों - बातों में शकट्‌ार कहता है, तुम्हारे स्वामी ने मेरे सात - सात निर्दोष पुत्रों का वध किया है। तब राक्षस कहता है मैं लज्जित हूँ , क्षमा मॉगने का भी मुझे अधिकार नहीं लेकिन मैं कुछ नहीं कर सकता। आज की स्थिति बहुत नाजुक

है। मगध पर सिकन्दर आक्रमण करना चाहता है। मगध का राजा नन्द विलासपूर्ण जीवन और नर्तकियों के मनोरंजन से उसे फुरसत नहीं मिलती । बीती हुई बातों को छोडकर अब तुम देशभक्ति या स्वामिभक्ति इनमें से किसी एक को चुन लो क्योंकि राक्षस के लिए इसमें से किसी एक बात को चुनना मुश्किल हो जाता है। राक्षस को पत्रो द्वारा शशिगुप्त ने ऐसा लिखा था। सभी भारत के नरेशों को मिलकर विदेशियों से सामना करना होगा। नन्द वह नहीं मानता और आखिर इसका नतीजा बुरा होता है।

सिकन्दर की अंतिम इच्छा सिल्यूकस जल्द ही भारत पर आक्रमण करके पूरी करने वाला है। चाणक्य ने अनेक बार पत्रो द्वारा नन्द को सुधारने का प्रयत्न किया लेकिन नन्द सुधरा नहीं। राक्षस सेनापति बडा देशभक्त है। वह कहता है मैं जीते जी महाराज पर कोई संकट न आने दूँगा। स्वयं युध्द करूँगा, प्राण दूँगा और मेरा कर्तव्य मैं निभाऊँगा ऐसा राक्षस चाणक्य से कहता है। क्रोधित होकर राक्षस शकट्रार क्या चाहते हो ? जिन हाथों ने नन्द को गोद में खिलाया है, वही हाथ नन्द का वध करें ? तुम क्या चाहते हो कि जिस मुख ने नन्द को आशीर्वाद देने के अतिरिक्त कभी एक कठोर शब्द भी नहीं कहा, वही मुख उसका वध करने की तुम्हें आज्ञा दे? जिस मस्तिष्क ने सदा उसका शुभ - चिन्तन ही किया है, वही उनके वध का षड्यंत्र रचे ? जो ह्दय सदा स्वामिभक्ति से ओत-प्रोत रहा है , वही आज स्वामिद्रोषी हो जावे ?''[43] शकटार भी क्रोधित हो उठता है। राक्षस तुम स्वामिरक्षक और देशभक्षक ही रहोगे, तुम भी नन्द की तरह सुधरोगे नहीं। देश के सामने व्यक्ति का महत्व नहीं रहता। शकट्रार आज से अपना कार्य करेगा और तुम अपना।

दूसरे दृश्य में पाटलिपुत्र नगर में नन्द कुछ नर्तकियों के साथ नन्द रममान, विलासप्रिय जिन्दगी का आनंद लुट रहा है। अचानक एक तीर नन्द के वक्षस्थल में लगता है। राजमहल में कोलाहाल मच जाता है। शकट्रार धनुष्य लिए हुए एक - एक के पश्चात छः बाण नन्द को मारता है। नन्द का वध करके शकट्रार अपने सात पुत्रों का बदला लेता है। यहाँ पर शशिगुप्त और चाणक्य इस बीती हुई घटना पर विचार कर रहे है।

साथ ही साथ पंचनद देश का राजा पर्वतक का सबसे ज्यादा विश्वास विषकन्या पर था , वही उसकी हत्या कर देती है। पर्वतक का स्त्री-दृष्टिकोन अच्छा नहीं था। वह भी राजा

होते हुए भी स्वार्थी और विश्वासघाती है ऐसा विषकन्या कहती हैं। यवनों से युध्द करने का सिर्फ उसका उद्देश्य सिकन्दर से सन्धि करना था। तुम्हारा सार्वजनिक स्वागत पर्वतक ने हीं किया था मैंने करवाया था। इसलिए शशिगुप्त से चाणक्य कहता है, पर्वतक सम्राट बनने योग्य नहीं था। इसलिए उसी रात चाणक्य के कहने पर विषकन्या द्वारा पर्वतक की हत्या मैंने करवायी। नहीं तो उसने हमारे दोनों की हत्या करने के लिए शकट्ार को कहा था और हत्या के बदले पर्वतक राजा शकट्ार को मंत्री बनवाने वाला था। पर्वतक की हत्या हो गयी यह पुण्य है क्योंकि दो निष्पाप व्यक्तियों की जान बच गयी। स्त्रियों को सिर्फवीर सैनिकों का मनोरंजन माननेवाला और अपनी महानता के लिए संसार को साधन माननेवाला पर्वतक भारतीय साम्राज्य का सम्राट न हुआ।

शशिगुप्त हेलन से प्रेम करता है यही बात सिर्फ उसके मुख से चाणक्य को पता चलती है। युध्द में सिल्यूकस को इसलिए शशिगुप्त ने छोड दिया है। चाणक्य देश की रक्षा के लिए शशिगुप्त को भारत को सम्राट बनाना चाहता है। शशिगुप्त गुरूवर्य चाणक्य की आज्ञा का पालन करता है , रक्तपात के बिना साम्राज्य अपने ओर आया है इसका वर्णन यहाँ पर किया है। 'शशिगुप्त' नाटक में चौथा अंक महत्वपूर्ण माना गया है।

निष्कर्षत: चाणक्य की कूटनीति और बुध्दि का सही रूप में समय पर उपयोग हुआ है। यहाँ पर सिकन्दर की मौत हो जाती है, नन्द को शकट्ार मार डालता है, पर्वतक की हत्या विषकन्या द्वारा हो जाती है और न कोई युध्द, रक्तपात के बिना पूर्ण रूप से साम्राज्य शशिगुप्त के पास आ जाता है। इस प्रकार शशिगुप्त यह सब सुनते चाणक्य अपने गुरूवर्य की ओर देखते खडा हो जाता है और चौथा अंक समाप्त हो जाता है।

पाँचवा अंक :-

पाँचवे अंक का प्रारंभ पाटलिपुत्र के सभाभवन और शशिगुप्त के राज्यभिषेक के चकाचौंध से होती है। यहॉ सभी अतिथियों को आमंत्रित किया गया है। इस नाटक में राज्याभिषेक का वर्णन बहुत अच्छे ढंग से किया है। सभी ओर उल्हासमय और आनंदित वातावरण है। महाधर्माध्यक्ष, उनके करीब राक्षस, चाणक्य, शकट्ार, वीरभद्र और अनेक ब्राह्मण बैठे हैं। सामने पूरी प्रजा बैठी हुई है। स्वर्णजटित मुद्रा अंग पर कुछ लोग सजधज

14497

कर आए आनंदोत्सव प्रजा मना रही है। महावाद्य , श्रृंग, सम्मट, शंख की ध्वनियाँ सभाभवन में गूंज उठी है। रंगमंच पर स्वागत गीत गाने के लिए सुन्दर सात युवतियाँ दिखायी देती है। 'शशिगुप्त' महाधर्माध्यक्ष के कहने पर सिंहासन ग्रहण करता है। राज्याभिषेक होने के पश्चात 'चन्द्रगुप्त' नाम रखा जाता है। सभी प्रजा और सभा भवन में , राजरामेश्वर, भारतसम्राट महाराजाधिराज, चन्द्रगुप्त मौर्य की जय। यह ध्वनि गुंजती है। इस वक्त शशिगुप्त के बारे में चाणक्य दिल से कहता है, "अश्वक जाति के एक साधारण से साधारण अधिपति ने अपनी असीम देशभक्ति, अपनी महान वीरता, अपने सर्वस्व त्याग, अपनी अपार कष्ट - सहिष्णुता के कारण असाधारण से असाधारण तथा उच्च से उच्च स्थान प्राप्त किया है। इस घटना ने समूचे देश की कायापालट की है और इस घटना का ऐतिहासिक संस्मरण सदा के लिए राष्ट्रनिर्माण में एक विशेष स्थान रखेगा।"[44] इस प्रकार ' एक साम्राज्य की स्थापना ' का सपना अश्वक जाति के सरदार शशिगुप्त का आज पुरा हुआ ऐसा चाणक्य बता देता है।

इस यज्ञ का संकल्प मोर पर्वत पर होने के कारण उन्होंने अपने कुल का नाम मौर्यवंश रखा है। शशिगुप्त अपने गुरूवर्य चाणक्य को इसका सभी श्रेय देता है। दूरदृष्टि, विद्वत्ता और देशभक्ति चाणक्य में देखने को मिलती है। ब्राह्मण और चाणक्य हर एक की कमजोरी जानते है और समय आने पर उसे सुझाव देते है। उसके सामने देश की वर्तमान दूर्दशा, राष्ट्र का भावी स्वरूप और उसकी संसिध्दि के संकल्प है। चाणक्य अब संन्यास ग्रहण के लिये चला जाता है।

संसार में व्यक्ति और कुल को महत्व नहीं रहता उसके कार्य को ही महत्त्व रहता है। इसकी मुझे आज अनुभूति हो गयी। मैं इश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि मैं आपकी कृपा और विश्वास का पात्र रह सकूँ और राज्याभिषेक समारोह समाप्त होता है। अचानक महाप्रतिहारी का प्रवेश होता है और उत्तरापथ पर सिल्यूकस ने आक्रमण किया ऐसा पत्र लेकर वह शशिगुप्त के पास आता है। अभिषेक के पहले यह खत आता तो मैं यवनों को हराकर ही सिंहासन ग्रहण करता ऐसा शशिगुप्त प्रजा से कहता है। शशिगुप्त फौरन आज्ञा देता है कि चाणक्य और राक्षस संन्यास ग्रहण करना छोडकर उत्तरापथ का प्रशासन और वहाँ की

स्थिती सँभाले। शशिगुप्त कहता है कि अपनी एकता को कोई भी तोड नहीं सकता। " मेरा दृढ विश्वास है कि यूनान क्या यदि सारा पश्चिम हमारे देश में घुस आवे तो हम उसे भी निकालने अथवा निगल कर पचा जाने की शक्ति रखते हैं।"[45] इस प्रकार अपने पर और सैनिकों पर पूरा विश्वास शशिगुप्त का रहता है।

सिन्धु के परे उत्तर में एक जंगली मार्ग पर यूनान सैनिकों में शशिगुप्त के वीरता के बारे में बाते होती है। सचमुच शशिगुप्त देवता के अवतार है , ऐसा यूनान सैनिक भी कहते है। यदि सिल्यूकस, ऑटिगोनस, सिसिमाक्स और टाले में झगडा न होता और सब ने मिलकर भारत पर आक्रमण करते तो यवन जीत जाते लेकिन अभी नामुनकिन है ऐसा सैनिक कहते है। वहॉ पर गाते हुए हेलन का प्रवेश होता है। आजकल सिल्यूकस को हेलन के गाने का क्रोध आ रहा है। सिल्यूकस कहता है , "हाँ, बेटी, वीरभद्र का गान चन्द्रगुप्त के जीत का कारण है और तेरा गान मेरी हार का कारण। तब हेलन पिताजी से कहती है , जिसने आपके प्राण बख्शे उन पर आक्रमण मत करो।"[46] न्याय के पथ पर आप नहीं है लेकिन सिल्यूकस को सिकन्दर की इच्छा पूरी करनी है। इस तरह सिल्यूकस का दिल टूट गया है। वीरभद्र वहॉ पर कुछ सैनिकों के साथ गाते हुए आता है। गान सुनते ही सिल्यूकस के सैनिक भाग जाते हैं। सिल्यूकस सभी को कायर कहके आवाज देता है लेकिन कोई भी नहीं ठहरता। युध्द भूमि का वर्णन शव, हाथ, पैर टूटे हुए पडे हैं, घोडों की मृत्यू, शव और जखमी हाथियों की दर्द भरी आवाज सुन पड रही है। "

चन्द्रगुप्त और सिल्यूकस में जोरों से युध्द हो रहा है। दोनो तरफ के सैनिक वीरमरण स्वीकार रहे है। प्राणों की बाजी देकर युध्द कर रहे है। सभी ओर क र्कश आवाज सुनायी दे रही है। कुछ देर पश्चात आम्भीक भारतीय सैनिकों के साथ आता है। तब शशिगुप्त अत्यंत क्रोध से आकर आम्भीक हा हृदय छेदता है और आम्भीक की मृत्यु हो जाती और अंत में सिल्यूकस और यूनान सैनिक शरणागती स्विकारते हैं। चन्द्रगुप्त मौर्य की विजय होती है। हेलन प्रेमगीत बैठे बैठे गा रही हैं। राजकुमार चन्द्रगुप्त हेलन की माफी माँगता हैं। हेलन अपने पिता, यूनान से और देश से प्रेम करती है और दूसरी ओर शशिगुप्त के प्रति सच्चा प्रेम उसके मन में है। मगर वह इजहार नहीं करती। जीतकर भी चन्द्रगुप्त हेलन के

पास क्षमा माँग रहा है इस बात से सहृद्यता का ,बडपन का हमे पता चलता है।

पाँचवे अंक के अंतिम दृश्य में चाणक्य, शशिगुप्त और सिल्यूकस का चित्रण दिखायी देता है। चाणक्य हेलन का विवाह शशिगुप्त से करने का तय करता है। चाणक्य सिल्यूकस से कहते हैं , ''हमें भूमि नहीं सम्राट, किन्तु कोई ऐसी वस्तु जिससे भारतीयों का यूनान पर आक्रमण कर सकना असंभव हो जाय। दो बार सम्राट यवनों ने भारत पर आक्रमण किया, भारतवासियों को भी यूनान पर आक्रमण करने की इच्छा हो सकती है। ''[47] सिल्यूकस आपके पास जो चीज है वह हमें दे दो इसके पश्चात भारत यूनान पर कभी भी आक्रमण नहीं करेंगा। चाणक्य अत्याधिक प्रेमभावना से सिल्यूकस की ओर देखकर यूनान और भारत के भविष्य के कल्याण के लिए संसार की शांति के लिए,मैं चाहता हूँ , सम्राट यूनान, राजकुमारी हेलन और भारत सम्राट चंद्रगुप्त का विवाह। यह विवाह पूर्व पश्चिम का होगा। मैं बहुत ही शर्मींदा हूँ । इसी कारण आप स्वयं ही हेलन से पूछे ऐसा सिल्यूकस कहता है। यहॉ पर चन्द्रगुप्त विवाह का प्रस्ताव चाणक्य ने सिल्यूकस के सामने रखा है।

सिल्यूकस का प्रवेश कुछ सैनिकों के साथ हेलन के पास होता है वह अंतिम बार हेलन को समझाता हैं। हेलन कहती है, भारत और यूनान की भूमि में, लोगों मे, संस्कृति में और प्रेम में कोई फर्क नहीं है। मैं आर्यावर्त छोडकर कहीं नहीं जाना चाहती। मैं विवाह सिर्फ शशिगुप्त से ही करूँगी। यहॉ पर हेलन के मन की व्यथा का वर्णन किया है। सिल्यूकस और हेलन चाणक्य की आज्ञा का पालन करते है और विवाह के लिए राजी हो जाते हैं।

आपसी भेदभावों को दूर रखकर चलो, एक नये विश्व की हम स्थापना करें। ऐसा कहते हुए ब्राहमण चाणक्य भारत सम्राट और भारत साम्राज्य दोनों को ही आपको हाथों मे सौंपकर अंत में संन्यास ग्रहण करता है। जिस आश्रम को अब मैं ग्रहण करने जा रहा हूँ उसमें न देश भिन्नता है, न जाति-वैषम्य। मेरे लिए अब सारा विश्व एक देश और मानव समाज एक जाति होगा, 'वसुधैव कुटुम्बकंम तथा सर्वभूतहिते रतः ' ये दो वाक्य मेरे भविष्य के जीवन का पथ-प्रदर्शन करेंगे। यह सुनते ही चन्द्रगुप्त बहुत ही दुःखी होता है और अपने गुरू से बिदा होता है। चाणक्य जाते वक्त शशिगुप्त से कहता है कि भारतीय और यवन दोनों पध्दती से विवाह करना। इकतालीस दिनों तक उत्सव दोनों साम्राज्य में हो और

हँसते हुए चाणक्य संन्यास ग्रहण करने निकल पडता है। चन्द्रगुप्त और हेलन चाणक्य के पैर पडते हैं और चाणक्य आशीर्वाद देता है। सिल्यूकस और चाणक्य हस्तांदोलन करते हैं और पाँचवे अंक का अंतिम दृश्य समाप्त हो जाता है।

नाटक के अंत में चंद्रगुप्त और हेलन के विवाह का वर्णन किया है। अग्नि की परिक्रमा और सभी रश्मे निभा रहे हैं। चन्दगुप्त के मुख पर रत्नजटित मोर है। आभूषणों से रहित दोनों का अंग है। दुल्हन की लाल साडी में हेलन बडी सुन्दर दिखायी दे रही है। अग्निदेव की चारों ओर ब्राहमण और सिल्यूकस खडे है। सभी अतिथि प्रजा और सैनिकों का समावेश है। परिक्रमा पूरी करते ही सिल्यूकस के आशीर्वाद के लिए दोनों आते हैं। सर पर हाथ रखकर सिल्यूकस आशीर्वाद देता है। अचानक विवाह के वक्त चाणक्य का प्रवेश और सभी प्रजा चाणक्य को अभिवादन करती है। दोनों चाणक्य के चरण स्पर्श कर लेते हैं। अतिप्रसन्न और शांति की मुद्रा से चाणक्य दोनों को हँसते हुए मुख को देखकर आशीर्वाद देता है। इस प्रकार शशिगुप्त नाटक का अंत सुखद रूप में समाप्त होता है।

निष्कर्ष -

'शशिगुप्त' ऐतिहासिक नाटक में जाति और देश की सीमाएँ व्यर्थ लगती है। इस नाटक में सारा संसार एक परिवार बन गया है। मौर्य साम्राज्य द्वारा विश्वसंहिता एवं एकता का भाव जोडा गया है। इस नाटक की महत्त्वपूर्ण विशेषता उत्तरार्ध्द और अन्य एक लक्ष्य को व्यक्त करता है। हेलन भावप्रवण, उदार तथा अहिंसा एवं सौहार्द की मूर्ति है। भारत और यूनान के एकत्रिकरण के लिए हेलन और चन्द्रगुप्त का विवाह हो जाता है। इस विवाह के साथ विश्वशांति और मैत्री की भावना 'शशिगुप्त' नाटक में दिखायी देती है। निष्कर्षत: चन्द्रगुप्त के आदर्श को 'शशिगुप्त' में प्रतिष्ठापित किया है। साथ ही साथ शशिगुप्त नाटक में तीखा सत्य, प्रामाणिकता और नये-नये खोज हमें देखने को मिलते हैं। इस प्रकार शशिगुप्त नाटक एक सशक्त रचना है।

2.4 'शेरशाह' नाटक का सामान्य परिचय :-

शेरशाह नवीनतम ऐतिहासिक नाटक 1942 में प्रकाशित हुआ। तैमूर वंश को भारत से मिटा देनेवाले अफगान सरदार के कृत्यों का परिचय 'शेरशाह' में दिया है। इसकी कथावस्तु

अफगान - मुगल संक्रान्ति काल की है। साहस और कठोर परिश्रम से हर काम मुश्किल होता है इसका वर्णन इसमें दिखायी देता है। शेरशाह मुस्लिम नेता होने के पश्चात भी वह हिन्दूओं की सार्वभौम उन्नति और राष्ट्रीय एकात्मता करनेवाला प्रथम मुस्लिम व्यक्ति है। अपनी उदारता, साहस और कर्मठता से उसने मुगलों को भारत से निकाल दिया है। इस नाटक में दो कहानियाँ साथ-साथ चलती हैं। मुख्य कहानी शेरशाह तथा उसके कार्यो से सम्बन्धित है और दूसरी कहानी शेरशाह के छोटे भाई निजाम की हैं।

मुस्लिम युग से सम्बन्धित और साम्प्रदायिकता के उलझनों पर लिखा हुआ शेरशाह नाटक है। शेरशाह नाटक में ब्रह्मादित्य शेरशाह को उंगली पकडकर भाग्योदय की दिशा में ले जाता है। बल, पराक्रम, कर्तव्यपरायणता आदि का शेरशाह प्रतीक है और ब्रह्मादित्य प्रेरणाशक्ति, महत्वकांक्षी और मानव चरित्र के श्वेत पथ के वृत्तियों का प्रतिक है। जीवन के व्यापक स्वरूप को प्रकट करने के लिए निजाम और लाडबानू की प्रांसगिक कथा, संयोग, गीतों की योजना, संकलन आदि दिखायी देते है। शेरशाह ब्रह्मादित्य के प्रेरणा से और आपने भाग्य से दिल्ली का तक्त हासिल करता है। इधर निजाम अपने मन की दुर्बलता के कारण अपने प्रेम को गुनाह समजते हुए अस्वस्थ रहता है।

शेरशाह नाटक में प्रमुख रूप से ऐतिहासिक घटनाओं की उथल-पुथल, युध्द, और इतिहास का संमिश्रण दिखायी देता है। निजाम और लाडबानू के चरित्र पूर्ण रूप से काल्पनिक है। इस नाटक में प्रमुख रूप से शेरशाह की वीरता और असाधारण चरित्र दिखाया गया है। निजाम का कवि ह्रदय और हुमायूँ की कमजोरी इस में प्रस्तुत की गयी है।

प्रथम अंक -

प्रथम अंक की शुरूआत निजाम के गीत से होती है। गीत प्रेम परक रहता है और संसार में कैसे हमें जीना है ? यह बताता है। नाटक के प्रथम दृश्य में हसन और निजाम के वार्तालाप से ज्ञात होता है कि फरीद घर से बाहर जौनपूर जाकर दस साल हो गए है। हसन अपने फरीद के विरह यहाँ पर बर्दाश्त नहीं कर सकते। फरीद की याद उन्हें हर पल सताती है। हसन खॉ के कुल मिलाकर आठ पुत्र है। फरीद खाँ और निजाम खाँ एक अफगान माँ से

पैदा हुए है। निजाम फरीद की यादों में हमेशा चित्र बनाते और शायरी करते रहते है। पुत्रप्रेम का वर्णन यहाँ पर दिखायी देता है।

फरीद को बुलाने के लिए पिताजी हसन खाँ जौनपूर जा रहे हैं। बडी कठिनाईयों का सामना करते जागीर संभालते है। फरीद के पिताजी कभी भी किसी भी बात की चिंता नहीं करते। वह दिनरात मेहनत करके जागीर का निर्माण किया है। सर्वसाधारण कुटुम्ब होने के बावजूद भी फरीद महत्वकांक्षी रहता है। कृषक वर्ग का वर्णन यहाँ पर दिखायी दिया है। भोगवाद का वर्णन पिता पुत्र में होता है। भाई फरीद से निजाम अपार प्रेम करता है। निजाम भाई की जुदाई में कैसी स्थिती हो गयी है इसका वर्णन किया है। फरीद अप्रसन्न होकर जौनपूर में जमाल खाँ के पास चला गया है। कुछ वर्षो बाद जब जौनपूर में रहनेवाले हसन खाँ कें संबधियों ने जिद्द की, तब वह फरीद को बिहार शरीफ वहॉ से ले गये। सासराम तथा खावसपुर के किले का जिम्मा फरीद पर सौंप दिया। गद्दी पर मसनद के सहारे फरीद बैठा हुआ हुक्का पी रहा है। उसके करीब ब्रहमादित्य गौड जो हिन्दू - होते हुए भी सबसे करीब फरीद रहता है। ब्रह्मदित्य और फरीद में बचपन के बातों को लेकर चर्चा होती है। पाठशाला का वर्णन, घर का वातावरण, शिक्षा का प्रभाव, आदर्श संस्कार और सच्चे मित्र के बारें में वर्णन यहाँ पर किया है। ब्रह्मादित्य कहता है फरीद तुम्हारे अच्छे गुणों के कारण आज तुम एक आदर्श सुबेदार हो। त्याग, तत्पर और सर्व धर्मसमभाव की भावना दिखायी देती है। पिता-पुत्र में कथानक होते है। पिताजी हसन खाँ फरीद को बुलाते है और कहते है, जिस प्रकार जौनपूर की तुमने कायापलट कर दी उसी प्रकार आपनों के लिए भी करो। यहाँ पर शेरशाह के मन परिवर्तन करने का प्रयास पिताजी ने किया है। आगे ब्रह्मादित्य मित्र की पहचान फरीद पिताजी से कराते है। पिताजी अपने सहसराँ ब्रहमदित्य को आने का वादा करवाते है। ब्रह्मादित्य फरीद के बारे में कहता है, ''भेदभाव से रहित इस सेवा में आपको एक विचित्र प्रकार का सुख मिलता है, एक अदभूत ढंग का संतोष होता है। आप इस कार्य में ऐसे तल्लीन हो जाते है कि अपने घरदार और जागीर को ही नही, आपने आपको भी भूल जाते है।''[48] फरीद सच्चे दिल से यहाँ पर प्रजा की सेवा की है इसलिए सुभेदार बन गये है।

सहसराँ में यहाँ पर फरीद का अगले दृश्य में प्रवेश होता है। निजाम चित्र बनाते हुए मंत्रमुग्ध हो गया है। निजाम के प्रति फरीद के दिल में प्यार रहता है। फरीद और निजाम दोनों का प्रेम वर्णन इस दृश्य में दिखाया है। पाक मुहब्बत कैसी होती है ? इसका वर्णन फ रीद निजाम को बताता है। फरीद एक जरूरी काम के लिए निजाम को मिलने सहसराँ आया है। फरीद कहता है मैं अब आग्रा जाना चाहता हूँ। नयी माँ का मिजाज रिआया की लोगों की हमदर्दी, हर वक्त हमारे खिलाफ साजिशों से इससे तंग आ चुका हूँ। सहसराँ में मेरा मन ही नहीं लगता ऐसा मैं ब्रह्मदित्य को भी बता दिया हूँ। उस वक्त निजाम भी फरीद के साथ चलने का अट्टाहास करता है। ''आपके साथ दोजख में भी आराम से रह सकता हूँ और आपके बिना जन्नत भी मुझे दोजख से ज्यादा बुरी मालूम होगी। आप समझते हैं बगैर आपके एक लमहा भी मैं कही आराम से गुजार सकता हूँ।''[49] इस प्रकार यहाँ पर दोनों भाई-भाई का प्रेम हमारे सामने दृष्टिगोचर होता है।

इसके बाद पहली बार प्रमुख नारी पात्र के रूप में लाडबानू का कुछ सहेलियों के साथ प्रवेश होता है। लाडबानू आगरे के सबसे दौलतमंद और खुबसूरत शहजादी है। उसकी सुंदरता में हर एक युवक पागल हो जाता है। निजाम आगरे के उद्यान के एक महल में गाते हुए तसबीर बना रहा है। गाने की आवाज सुनते ही कुछ सहेलियाँ और लाडबानू वहाँ पे आ जाती है। तसबीर बनाने में निजाम मग्न हो गया है। गाते - गाते निजाम का हाथ प्याले को लग जाता है। उस ग्लास में रंग रहता है और वह रंग लाड के सलवार पर पड जाता है। प्याले का गिरना, पिछे लाड का आना, टूटना और लाड की चीख यह घटना काल्पनिक है। सजा के तौर पर निजाम को लाडबानू की तसबीर बनानी पडती है। पहले - पहल निजाम इन्कार कर देता है परतु सहेलीयों के जिद्द के सामने हार जाता है। निजाम तीन रोजाना आने को कहता है। लाड भी पहले पहले शर्माती है फिर बाद में मान जाती है। लाड जब शर्माती है तब सभी सहेलियाँ उसे कहती है, शादी होने जा रही है और फिर शर्माती क्यों है। इस दृश्य में निजाम और लाडबानू की पहचान किस प्रकार से होती है और अव्यक्त प्रेम की ज्वाला से दग्ध दो कोमल हृदयों का सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक चित्रण हमें दिखायी देता है।

ब्रह्मादित्य और फरीद की दोस्ती का वर्णन यहाँ पर दिखायी देता है। गुणों की तारीफ और दोषों की निंदा यह सच्चे दोस्त के प्रति होती है ऐसा ब्रह्मादित्य कहता है। आगरे में फरीद के महल में दु:खित मुद्रा से निजाम का प्रवेश और पिताजी चल बसे, इंन्तकाल हो गया यह खबर लेकर रोते हुए आता है। फरीद भी बडा दु:खित निराश हो जाता है। फौरन सरसराँ तीनों चले आते है। ब्रह्मादित्य दोनों भाईयों कों आधार और सहानुभूति देता है। भावुकता से कार्य करता है। आपके पिता को षड्यंत्र से ही मारा गया है। पिताजी के पश्चात जागीर पर आपका अधिकार है। दौलत खॉ के इजाजत से जागीर को तुम्हें चलाना होगा। निजाम सिर्फ रोता ही रहता है इन बातों तरफ उसका ख्याल नहीं है।

इसके बाद लाडबानू और निजाम में प्यार हो गया है। लेकिन वह मिल नही पाते। विरह वर्णन का सुन्दर वर्णन इस दृश्य में दिखायी देता है। लाड की सहेलियाँ लाड को बहुत परेशान करती है। "मेरा मतलब है हमें सिर्फ तसबीर देखने की बेचैनी है और तुम्हे तसबीर और मुसव्विर दोनों को देखने की।"[50] शर्म के मारे लाड सहेलियों से नाराज होती है और निजाम के इंतजार में एक गाना गाते है। पिताजी की मृत्यू के पश्चात सहसराँ में फरीद, निजाम और ब्रहमादित्य बैठे हुए हैं। यहॉ पर फरीद के आदर्श कार्यो का वर्णन किया है। आगरे में हृदय से प्रजा की सेवा, आदर्श मूल्यों की पहचान, अहिंसा वादी और सर्वधर्म समभावना के पथ से चलनेवाला आदर्श राजा के रूप में ख्याति है। सुलेमान और अहमद का यहॉ पर वर्णन किया है।

पहले अंक में निस्वार्थ रूप से, सच्ची लगन , मेहनत से, जो कार्य हम करते है उसमें बरकत हमेशा मिल जाती है। ब्रह्मादित्य के कहने पर आगरे से शाही फरमान लाने फरीद जाते हैं उसमें सफलता मिलती है। किसी के हृदय पर हमे अधिकार प्राप्त करना है तो सच्चे मन से, निस्वार्थ रूप से उसकी सेवा करना जरूरी है। हम हमारे कर्तव्य से नया आदर्श निर्माण कर सकते हैं। इसका वर्णन शेरशाह और ब्रहमादित्य के कार्यो से किया है।

द्‌वितीय अंक -

निजाम लाडबानू के चित्र को देखते हुए सितार बजाकर गाना गा रहा है। निजाम और लाडबानू का प्रेम वर्णन यहाँ पर दिखायी देता है। अचानक कमरे में फरीद का प्रवेश होता

है और निजाम हक्का-बक्का सा रह जाता है। निजाम फरीद से वह तसबीर छुपाना चाहता है लेकिन छिप नही सकती। फरीद पूछता है, यह किस औरत की तसबीर है अगर वह तुम्हारी शादी के लिए हाँ की तो मैं तुम्हारी फौरन शादी करूँगा। मूर्ति के सदृश निजाम चुपचाप सर निचे झुकाएँ खडा रहता है। यहाँ पर भाईभाईयों का आपसी प्यार - आदरयुक्त भावना हमें दिखायी देती है। फरीद अपने छोटे भाई निजाम से वादा करता है '' निजाम ! अगर तुम मुझे इतना चाहते हो तो मैं भी तुम्हारा भाई हूँ। तुम खुद्द कह चुके हो की मेरा दिल भी रेगिस्तान नहीं। तुम मुझे दिल खोलकर सारा हाल क्यों नही कहते?'' मैं वादा करता हूँ कि यह औरत तुम्हारी शादी के काबील हुई तो मैं उसके साथ तुम्हारी शादी जरूर करा दूँगा।''[51] फरीद कहता है मुहब्बत सिर्फ यादों की नहीं चाहिए। कितनी जिन्दगीयाँ बरबाद हो गयी हैं। शादी का अभी तक विचार भी निजाम के कभी मन में आया नहीं। फरीद बाहरी तक्त के लिए बिहार शरीफ के सुबेदार के पास चला जाता है। निजाम को जागीर का काम सौंप देता है और फरीद अपने प्यारे भाई निजाम से कहता है। ''बचपन की यह बाते अब खत्म करो और बन्द करो यह मुसव्विरी और शायरी भी। तुम एक जागीरदार के लडके हो। तुम्हारी रगो में पठानी खून हैं। दुनिया में तुम भी कुछ काम करने आये हो। जौनपूर मेरा मदरसा हुआ था यह जागीर तुम्हारा मदरसा हो।''[52] इन्सान के सर पे जिम्मेदारी जब तक नहीं पडती तब तक कर्तव्य की जान नही होती। फरीद निजाम को एक ओर प्रोत्साहित कार्य करने के लिए कहता और दूसरी ओर विवाह करने का इन्तजाम मैं करुँगा ऐसा कहता है । दूसरी ओर नसीम और लाडबानू का वर्णन किया है । लाडबानू के चुनार किले के कसरे का वर्णन दिखायी देता है । नसीम एक मैंना है वह पिंजरे में रखा हैं। लाड की वह सखी है। लाड उसे देखकर प्रेमगीत गा रही है। प्राणी भी इन्सान से ज्यादा ईमानदार होते है। यह नसीम के जरिए से पता चलता है । लाड के प्रणय प्रसंग का वर्णन यहाँ पर दिखायी गया है। नसीम मुझे निजाम से प्यार हो गया, आगरे के उस बाग में मुसव्विर मेरा दिल चुरा लिया । इस तरह बडे उत्साहित होकर लाड नसीम को बना देती है । लाड अभी तक मुसव्विर का नाम भी नही जानती। ब्रह्मादित्य और शेरखाँ भविष्य के बारे में दोनों विचार करते हुए जैनापूर में बैठे है। फरीद का राज्यभिषेक के समय शेरखाँ नाम रख देंगे। सिंहासन मिलनेवाला है यह प्रारंभिक शकुन है।

बाहरी आक्रमणों का वर्णन इस दृश्य में दिखायी देता है। मुगलों के प्रति हमेशा शेरखाँ घृणा ही करता है। ब्रह्मादित्य से कहता है, ''देखो, पंडीत, मुगल चाहे - मुसलमान हो, लेकिन उन्हें मैं इस मुल्क के लिये लुटेरा समझता हूँ। इस मुल्क की दौलत न जाने कितनी बाहरी कौमों को यहाँ आने के लिए ललचाया है।'' फिर भी हम हमारे मुल्क में किसी को स्थान नहीं दिया सभी को भ.गा दिया है। मैं किसी के मजहब का लिहाज नहीं करता। भारतीय मुसलमानों से मेरे मन में अपार श्रध्दा और विदेशी मुसलमानो के प्रति घृणा मेरे मन में है। ऐसा शेरखाँ स्पष्ट बता देता है। भारत पर विदेशी आक्रमण किस प्रकार हो गये इसका वर्णन ब्रह्मादित्य यहाँ पर करता है। सबसे पहले यवन आये। वे लूट खसोट कर चले गये। उनके पश्चात शक और हुण आये। फि र गजनी और गौर के मुसलमान आये, ऐसी लूटमार हुई जैसी उसकी पहले कभी न हुई।

अभी बाहरी कौमों का आना अभी भी नहीं रुका है। मुगल तैमुर का हमला, बाद में बाबर का, महमूद गजनवी इस प्रकार आक्रमण हमारे भारत पर होते ही गये। यह हमारे देश के लिए दु:खद घटना है। आज हमें आपकी बातों को रोककर बाहरी आक्रमणो को रोकना होगा।

इसके बाद अगले अंक में निजाम चबुतरे पर बैठकर गा रहा है। निजाम का सेवक रेहमान का प्रवेश वहाँ पर होता है। निजाम बीमार है इसलिए रेहमान दूध लेकर आया है लेकिन निजाम दूध नही पिता। लाडबानू की तसबीर और शायरी, गजल करना इतना ही सिर्फ निजाम जानता है। अहलकार दो खबरे लेकर आता है, एक बिहार शरीफ में जागीरदार साहब नहीं है और दूसरी महमद खाँ सूर जागीर पर आक्रमण करने के लिए रवाना हो गये है। बडे मियाँ शेरखाँ को मैं क्या जबाब दूँ ? दूध पिलो। ऐसा रेहमान अपने स्वामी के प्रति कर्तव्य निभाते हैं। चाँदनी के प्रकाश में शेरखाँ और ब्रह्मादित्य बैठे हुए हैं। सुल्तान इब्राहिम और महमूद लोदी की हार हो गयी और बाबर की जीत हो गयी। दरबान से कहकर निजाम शेरखाँ से मिलने आया है। विदेशी मुसलमानों को शेरखाँ, लुटेरे, बडे से बडे दुश्मन और स्वार्थी समझता है। फिर भी उनके सामने सर झुकाना देश के लिए पड रहा है। मैंने उनके साथ कई बार नमाज पढी है लेकिन खुदा की ठीक इबादत नहीं होती। नमाज के बारे

में शेरखाँ कहता है - "तुम हिन्दू हो, तुम्हारी सन्ध्या, पूजा, प्रार्थना में मै शरीक नहीं हो सकता, पर जब कभी तुम्हारे संध्या पूजा करते देखता हूँ, दिल में ईश्वर के लिए मुहब्बत और इज्जत पैदा होती है।"[53] यहाँ पर शेरखाँ सर्वधर्म समावेशक का प्रतिपाद्य करता है। आदर्श राजा के बावजूद वह सर्वसामान्य नागरिक जैसा रहता है। हिन्दू मुस्लिमों में ऐक्य निर्माण करनेवाला पहिला भारतीय राजा हैं।

निजाम को मिलने शेरखाँ सहसराँ आया है। शेरशाह अपनी वीरता की प्रशंसा और हमें दूसरे राज्यों मे मदद कैसे मिलती है यह निजाम को शेरखाँ बताता है। इस वक्त मैंने बाबर का दिल जीत लिया है। जागीर के बारे में अब तुम चिंता मत करो, मैं शेर बनकर इस दफ्फा सुलमान और उनकी वालिदा मोहम्मद खाँ को खा जाऊँगा। अपने मुल्क की स्वाधीनता के लिए शेरखाँ मर मिटने को तैयार है।

आगे के दृश्य में रेहमान और निजाम बैठे है। निजाम नाराज हो गया है वह दौलत के प्रति नफरत करने लगा है। यहाँ पे दर्दभरे गीत निजाम गा रहा है। दौलत किस तरह इन्सान को मुहब्बत से दूर स्वार्थीवृत्ती और अहं का निर्माण करती है इसका चित्रण यहाँ पे हुआ है। साथ ही साथ पाक मुहब्बत क्या से क्या बना देती है। इसका जिक्र यहाँ पे किया हैं। अहं, स्वार्थीवृत्ती, अपनेपन की भावना और आत्मसमर्पण की भावना को बढावा देती है। मुहब्बत करनेवाले की स्थिति किस प्रकार होती है इसका वर्णन निजाम गजल के माध्यम से बहुत ही बेहतरीन तरह से पेश किया है।

निजाम को दो मुहब्बतों में से एक का चुनाव करना है। एक ओर भाई का निस्वार्थ रूप से प्यार और दूसरी तरफ पाक मुहब्बत । यहाँ पर निजाम की व्दिधा स्थिति हो गयी है। ब्रह्मादित्य की शेरखाँ राह देख रहा है। शेरखाँ का यहाँ पर स्वाभिमानी रूप दिखायी देता है। शेरखाँ ब्रह्मादित्य से कहता है - " पंडित , मुगलों की मदद से अपनी जागीर वापस पाकर मुझे जितना अफसोस हो रहा है, उतना आज तक कभी न हुआ था।"[54] तमाम जागीर में सुलेमान और अहमद को देकर निजाम के साथ शेरखाँ सहसराँ छोड देना चाहता है। प्रायश्चित भावना का वर्णन शेरखाँ ने किया है। ब्रह्मादित्य शेरखाँ से कहता है, जिन आदर्शों को, उद्देश्यों को आप ने हमारे सामने रखा है उसके सामने जागीर तुच्छ वस्तु है।

यह सुनते ही शेरखाँ क्रोधित हो उठता है। इस जागीर के लिए मैं सहसराँ छोडा, भाई के प्यार को त्याग दिया, दिलों जान से मैं जिसे नफरत करता हूँ उनके सामने सर झुकाना पडा, रिआयों की खिदमत मिट्टी में मिला दी और मेरे तमाम उम्मीदों पर पानी फेर दिया। यह सब इसलिए किया कि सिर्फ मेरे जागीर वापसी के लिए। मेरे पुश्तोंने जो भी धन, दौलत, शौकत और रूतबा कमाया है वह मैं जागीर में देखना चाहता हूँ। मेरा जागीर, मेरा मुल्क, मेरा देश और मेरे देशवासियों से मरते दम तक मैं प्यार करते रहूँगा ऐसा शेरखाँ कहता है। निजाम बिहार शरीफ जाना चाहता है। खानदानी झगडों को खत्म करके वे महान कार्य करना चाहता है। सुलेमान और महमद को शेरखाँ पकड लाने के लिए कहता है। निजाम अपनी पाक मुहब्बत के प्रति रेहमान को बता देता है। एक हिन्दू शायर ने सही कहा है, ये न छिपाये सजनी, इक नह के नैन और सुगन्ध की चोरी। शेरखाँ कहता निजाम से अंग ढँकने के लिए सिर्फ एक कपडा हम यहाँ से ले जायेंगे। यहाँ पर शेरखाँ का उदारमतवाद और निस्वार्थ रूप हमें दिखायी देता है। निजाम तसबीर लेकर जाने की इजाजत लेता है।

दूसरे अंक का प्रारंभ सहसराँ में निजाम के गान से और सहसराँ छोडकर बिहार शरीफ निजाम और शेरखाँ जाने से होता है। इस अंक में पाक-नापाक मुहब्बत के बारे में वार्तालाप, बाहरी आक्रमणों का वर्णन, ब्रह्मादित्य का शेरखाँ के प्रति मित्रप्रेम और शेरखाँ का जागीर, मुल्क, देश के प्रति अपार प्रेम दिखायी देता है।

तीसरा अंक -

शेरखाँ और ब्रह्मादित्य युध्द के बारे में विचार कर रहे हैं। शेरखाँ का आक्रमण का प्रारंभ चुनार किले से होता है। लोदी और मुगलों में आपसी मतभेद हो रहे है। बाबर मर गया है। बिहार शरीफ के सुबेदार बहारखाँ के मर जाने के बाद उसका बेटा जलालखाँ के हाथ मे सौंप दिया है। बाबर का लडका हुमायूँ से इस वक्त युध्द करने की हमारी स्थिति नहीं है क्योंकि हम कमजोर है। सोच समझकर, संयम से हमें काम लेना चाहिए ऐसा ब्रह्मादित्य कहता है। दूसरी तरफ युध्द के लिए हमें धनदौलत चाहिए। इसलिए ताजखाँ के चुनार किले पर आक्रमण करना और बेगम लाड से शादी करना यह मुख्य उद्देश शेरखाँ का रहता है। लाड के पास अपार धनदौलत है अपने मुल्क के भलाई के लिए शेरखाँ यह सब

करता है। इस दौलत का सहारा लेकर वह मुगलों पर आक्रमण करना चाहता है और एक साम्राज्य स्थापन करना चाहता है। इसलिए राजकाज में निजाम को शायरी और तसबीरे बनाना छोडकर इसमें सहभाग लो, ऐसी आज्ञा शेरखाँ निजाम को देता है। ब्रह्मादित्य कहता है आपके अनुपस्थिति में निजाम ने जागीर कारोबार संभाला था, वह आदर्श राजनीतिक है, देशभक्त है और स्वाभिमानी है इसलिए मुझे विश्वास है वह कारोबार संभालेगा।

" मैं हू हिन्दी, इसी मुल्क में पैदा हुआ , यही की आबोहवा में पला , यही की मिट्टी से बना और इसी मिट्टी में मिलूंगा यहॉ से बाहर देखने के लिए मेरे पास कुछ नही। हिन्दुस्तान ही मेरे लिए सब कुछ है। यहाँ के रहनेवाले चाहे वह किसी भी मजहब्बी मिलत के है मेरे भाई बिरादर है।"[55] यहाँ पर अत्यंत एकाग्र होकर शेरखाँ देशप्रेम को व्यक्त करता है। शेरखाँ एक सच्चा देशप्रेमी मुस्लिम राजा है उसके रगरग में हिन्दुस्तान के प्रति आदर प्यार और मर मिटने की भावना दिखायी देती है।

शेरखाँ ने यहाँ पर भारत में रहनेवाले मुस्लिम लोगों के प्रति करारा व्यंग्य कसा है। शेरखॉ ब्रह्मादित्य से कहता है जो हिन्दुस्तान और यहाँ के रहनेवालो से नफरत करता है चाहे वह मेरा मजहब ही क्यों न हो मैं उससे नफरत करता हूँ। सब से जरूरत युध्द के लिए दौलत है इसी कारणवश जो सुबेदार ताजखाँ है उनकी बेगम लाड मलिका बहुत ही सुन्दर और दौलत मन्द अमीर खानदानी है। लाड के पास मोती और सोना मनो में गिना जाता है। बिहार की सारी ताकद आज मेरे हाथ में है। शेरखाँ अब चुनार पर चढाई करके, ताजखॉ का कत्ल करके लाड से शादी करने की बात सोच रहा है। प्रेम, शादी और संतान इस पर शेरखाँ का विश्वास ही नहीं है। " प्रेमव्रेम मैं नहीं जानता पंडित इस तरह के इश्क वगैरे से ज्यादा फालतू और नुकसान देह चीज मैं दुनिया में कोई नहीं मानता लेकिन यह शादी मुल्क की भलाई के लिए मै जरूरी समझता हूँ। लाड मलिका की दौलत मुगलों को निकालने में बहुत मदद्गार होगी "[56] सिर्फअपनी मुल्क की भलाई के लिए शेरखाँ विवाह कर रहा है। निजाम बैठे बैठे विचार मग्न हो गया है लेकिन किसी के पास अपने मन की बात नही बोलता वह सिर्फ सोच रहा है।

आगे इसके बाद इधर लाडबानू मन ही मन निजाम को बहुत चाहती है। लेकिन उसकी दौलत ने उसके सपनों को चक्काचूर कर दिया है। दौलत के कारण प्यार टूटता है। यह देखकर लाड दुखी हो जाती है। अपने मन की व्यथा वह मैना नसीम को सुनाती है। दर असल यह शादी याने कंकर,पत्थरों से, हिरो, पन्नो , लालो गौहर की सोनेचांदी की होती है। दिल की नहीं इसमें लाड की मनोव्यथा का वर्णन दिखायी देता है। इसके बाद निजाम अपने परछायी से बाते करता है। एक निजाम उसके मन को शांति देने का कार्य करता है दुसरा उलझनो में डाल देता है। ताजखॉ को मारा गया चुनार भाई जान को मिल गया। क्या लाड का दिल भाई जान को मिलेगा ? यह बात हर पल निजाम को सताती रहती है। दुसरा निजाम कहता है कि मुझे सिर्फ दौलत चाहिए मेरे मुल्क के लिए मुगलों को बाहर निकालने के लिए पहला निजाम कहता है , " माना कि वह मुल्क के लिए दौलत चाहते है फिर भी उन्हे एक भोली भाली सीधी सादी औरत की जिन्दगी को खिलवाड बनाने का क्या हक्क है? क्या औरत आदमी के लिए खिलौना से ज्यादा कुछ भी नही है जो चाहे जिस तरह उससे खेले। मुहब्बत के लिए शादी जायज है , दौलत के लिए शादी सुनी थी , लेकिन मुल्क के लिए शादी तो एक अजीबो गरीब चीज है।"[57] पहले निजाम के रूप में खुदद निजाम का मन ही है और दुसरा निजाम याने शेरखाँ का प्रतिक रूप माना गया है। निजाम शेरखाँ पर शक करता है। निजाम के मतानुसार चुनार के लडाई के लिए भाईसाहब गये तब उन्हें जान बूझकर नहीं ले गये। सत्य का भास होना, पुरानी बाते याद आना और आधी रात को चुनार जाना , रेहमान का डॉटना यह सब बच्चों जैसी बातों पर निजाम को गुस्सा आ जाता है। एक और भाई का प्यार और दुसरी और पाक मुहब्बत में निजाम डुब गया है।

शेरखाँ और लाडबानू का विवाह हो रहा है। सभी और खुशहाली दिखायी देती है। काजी शादी की रस्म अदा कर रहा है। शेरखाँ को सभी अतिथी शादी की मुबारक बात दे रहे है। शादी चुनार में हो रही है। नेपथ्य में शहनाई की आवाज गूंज उठी है। नर्तकियों का नाचगाना शुरू है। अचानक बिन बुलाये निजाम का प्रवेश चुनार के आँगन में हो जाता है। यह सब देखकर निजाम आश्चर्यचकित हो जाता है। निजाम भाईजान को चुनार की फतह और शादी की मुबारक बात देने के लिए हाजिर हो गया है। अपने आपको पूर्ण रूप से

निजाम संभालता है और बडा दुखी होता है। निजाम अपने प्यार को कुर्बान करते हुए उपरी तौर पर हँस रहा है। शेरखाँ निजाम को देखते ही मण्डप से दौडते हुए बडे प्यार से गले लगा लेता है और विवाह का सारा वृत्तांत खुलकर बताता है।

नसीम और लाड में विवाह के बारे में वार्तालाप होते है। लाड ने नसीम को बिल्ली से बचा लिया है। लाड को सच्चा प्यार न मिलने के कारण वह मन से अस्तव्यस्त है। भाभी को शादी की मुबारक बात देने के लिए देवर निजाम कमरे में आ जाता है। लाड आश्चर्य से मुसव्विर को कहती है, तब निजाम कहता है "सिर झुकाते हुए भराये हुए स्वर में मुसव्विर नही मैं आपका देवर हूँ । तब लाड कुछ नहीं बोलती। वह निस्तब्धता से खडी रहती है। भाईजान और आपको इस शादी की मुबारक बाद देने के लिए मैं बिहार शरीफ से हाजिर हुआ हूँ।"[58] जब लाडबानू भाभी के नकाब में निजाम के सामने आ जाती है तब निजाम की आँखो से दो बूँद लाड के पैरो पर गिरते है तब चारो ओर कमरे में सन्नाटा शान्ति छायी हुई है। निजाम बिदा लेता है तब लाड रो पडती है । यहाँ पर लाड और निजाम का प्रेमवर्णन और विरह वर्णन दिखाया है।

शेरखाँ और ब्रह्मादित्य दोनों भविष्य के बारे में वार्तालाप कर रहे है। सुलतान मोहम्मद लोदी और पठान अब खत्म हो गये है। अपने मकसद को पुरा करने के लिए हमे हमेशा कार्यरत रहना चाहिए जिस प्रकार की चर्चाओं ने आपसे अपनी पुश्तैनी जागीर छुडवा दी। उसी प्रकार की चर्चाओं से आज हमारा मकसद पुरा करेंगें। बादशाह हुमायूँ का खत सरदार लेकर शेरखाँ के पास आता है। खत में लिखा है कि चुनार फौरन छोड दो, हमारे हवाले कर दो, नहीं तो जंग की जायेगी। शेरखाँ यह खत पढते ही क्रोधित हो उठता है और कहता मुझे सोचना होगा, सरदार साहब कि , मुझे सुलह मंजूर है या जंग। आज शाम तक खत का जबाब मिल जायेगा तुम्हारे ठहरने का इन्तजाम कराया है ऐसा शेरशहा कहता है। चुनार में निजाम लाड की तसबीर को देखकर शायरी करता है मग लाड चोरी से सुन लेती है और वह चुपके से आधी रात को निजाम के कमरे में आ जाती है। कमरे के अन्दर लाड को देखकर निजाम आश्चर्यचकित हो जाता है। निजाम शर्माता है कोई देख ले

तो क्या कहेगा। इसका विचार निजाम करता है। चुनार के बाहर युध्द क्षेत्र का वर्णन दिखायी देता है।

निष्कर्षत: इस प्रकार तीसरे अंक का प्रारंभ युध्द से होता है और अंत बाहरी युध्द और बिहार शरीफके वर्णन से होता है। इसमें शेरखाँ का विवाह लाड से, मोहम्मद लोदी और ताजखाँ का वध और निजाम की मन की व्यथा का वर्णन बडे मार्मिक ढंग से दिखायी देता है। इस तरह तीसरा अंक समाप्त हो जाता है।

चौंथा अंक :-

चौथे अंक का प्रारंभ शेरखाँ और ब्रह्मादित्य के बातों से शुरू होता है। ब्रह्मादित्य शेरखाँ को दो खबरे सुनाता है , एक खबर तो यह है कि बंगाल का बिहार पर आक्रमण हो रहा है और दूसरी यह कि कुछ लोहनी सरदार आपकी हत्या का षडयंत्र रच रहे है। यहाँ के सुबेदार जलाल खाँ भी इसमें सामील है। मैं इन बातों से डरता नहीं। मैं अपनी जिन्दगी से तंग आ चुका हूँ क्योंकि बुजुर्गो द्वारा कमाई हुई जागीर गयी, अपना फतह किया हुआ चुनार गया और बिहार शरीफकी नोकरी चले जाने की अब बारी है। बिहार शरीफ के नोकरी ने मुझे फरीद से शेरखाँ बना दिया है। पठानो एवं मुगलो में दौरा गाँव के पास युध्द हुआ है। उसमें मुगलों की जीत हो गयी है। इसी समय चुनार का किला हुमायूँ ने शेरखाँ से छिन लिया है। जलाल खाँ कहकर लडाई का दल लेकर पठानों से जंग हम करेंगे यकीनन हमारी जीत होगी। युध्द और युध्द के परिणाम को मैं अच्छी तरह जानता हूँ। बंगाल और बिहार का जंग हमे कहाँ ले जायेगा यह आज हम नहीं कह सकते और रही मेरी हत्या की बात " वह तो बहुत छोटी -सी बात है उस साजिश को हम किसी भी तरह खत्म कर देंगे और फिर पंडित तुम तो समझते हो न कि मै बडे बडे कामों के लिए पैदा हुआ हूँ। बीना उन कामों को पुरा हुए मेरा खून कैसे हो सकता है "[59] इस प्रकार मन की बात शेरखाँ ब्रहमदित्य को बता देता है। एक सच्चा पथ दर्शक मित्र और देशभक्त के रूप में ब्रह्मादित्य की पहचान इस नाटक में देखने को मिलती है।

लाड बीमार पड गयी है इसी कारण एक लौंडीं को लेकर निजाम उसके कमरे मे आ जाता है। निजाम के विरह मे वह बेहोश पडी है। वह दवा भी नहीं पीती । निजाम भाभी

कहकर बहुत बार आवाज देता है लेकिन होश नहीं आता परंतू बानू बानू कहने से थोडा-सा होश लाड को आ जाता है और धीमी -धीमी गति से आँखे खोलते हुए बडे प्यार से निजाम को देखती रहती है। लाड के आँसू निजाम अपने हाथों से पूछता है और हाथों में हाथ थाम लेता है। लाड कहती है उसी समय मैं जीत गयी अब मैं पूर्ण रूप से ठीक हो जाऊंगी। निजाम अपने भाई शेरखाँ को भाभी लाड बानू के प्रति जो पाक-मुहब्बत है यह शेरखाँ को बताने जाता है । लेकिन युध्द की स्थिति में और राजकारोबार के कार्यो में शेरखाँ को मेरी ओर देखने की फुरसत नहीं मिलती। जलालखाँ न युध्द, न संधि करते हुए वह बंगाल के सुलतान के मेहमान बने है यह सुनते ही शेरखाँ क्रोधित हो उठता है। शेरखाँ के समज में कुछ नहीं आता। यहाँ पर जलाल खाँ ने शेरखाँ को धोका दिया है। जलालखाँ के वालिद ने मुझे नौकर रखा था। जलालखाँ मेरा शार्गीद रह चुका है इसलिए मै उसके प्रति मुहब्बत करता था। लेकिन उसीने मुल्क नजर करके मुझे छुटकारा दिया है। आज से बिहार बंगाल का न होकर आजाद मुल्क है ब्रह्मादित्य से शेरखाँ कहता है " सुना ही है कि हुमायूँ गुजरात पर हमला करनेवाला है, उसके गुजरात की लडाई में फँसते ही हमारी फौंजे बंगाल की तरफ कुच करेगी इन दिनों हमारे मकसदों की तरफ जाने के हमारे जो रास्ते बंद हो गये थे वह यकायक फिर खुल गये। चलो, पंडित मेरे साथ आओ मैं अभी-अभी यह ऐलान करता हूँ।" इस प्रकार पूरी तैयारी के साथ शेरखाँ हुमायूँ पर हमला करने की योजना बनाता है। शेरखाँ निजाम की बात सुनता ही नहीं और शीघ्रता से निजाम की तरफ न देखे हुए वह युध्द की तैयारी के लिए रवाना हो जाता है। निजाम शेरखाँ के इन्तजार में निराश होकर आखिर रो पडता है।

लाड बानू के साथ शेरखाँ ने विवाह किया था। परंतु वैवाहिक सुख एक दिन भी उसे न मिला क्योंकि शेरखाँ हमेशा अपनी प्रजा की सेवा, युध्द और स्वाधीनता की चिंता राष्ट्रीय एकात्मता के बारे में सोचता रहता है। कभी फुरसत से लाड की ओर एक बार भी शेरखाँ ने नही देखा। लाड दौलत से सक्त नफरत करती है। क्योंकि दौलत होने के कारण ही लाड को सच्चे प्यार से वंचित होना पडा। लाड गाना गा रही है उस गाने में वह बार-बार कह रही है कि दौलत से प्यार को खरीदा नहीं जाता। लाड के पास जो कुछ भी दौलत है वह

शेरखाँ को देना चाहती है। इसलिए सब दौलत निकाल कर रखी है। अचानक निजाम का प्रवेश वहॉ पर होता है। इतनी सारी दौलत निजाम देखकर हक्का बक्का सा रह जाता है। आपके भाईसाहब बंगाल पर कूच करने जा रहे है। इसलिए यह सभी दौलत लाड उन्हें दे रही है। मैं नहीं चाहती कि इस दौलत के खातिर जबरदस्ती से किसी की बीबी बन जाऊँ। इस प्रकार अपनी मन की व्यथा लाड बानू निजाम से कहती है। यहाँ नाटककार ने बदनसीब बानू का चित्रण यहाँ पर किया है। लाडबानू निजाम को समझाती है ,'' नही, नहीं निजाम ऐसा नहीं कहते, दिल को इतना छोटा न बनाओ , माना कि उस दिन हमारे दिल बेकाबू हो गये थे , पर गुनहगार हम न थे कौन -सी गुस्ताखी की थी ? हम इन्सान है हमारे पास इन्सान का दिल है , जो खुदा की सबसे बेहतरीन नियामत है। खुदा की नियामत हमारी अपनी चीज है , दिल हँसता है, दिल रोता है और दिल मुहब्बत भी करता है। निजाम जो महब्बत दिल से होती है , वह पाक मुहब्बत है। हमारी मुहब्बत पाक है यकिन करो निजाम हमारी मुहब्बत पाक है। ''[60] इस प्रकार लाड निजाम की पाक मुहब्बत का वर्णन यहाँ पर किया है।

शेरखॉ और बह्मादित्य इन दोनों में मित्र प्रेम का वर्णन दिखायी देता है। बह्मादित्य यहाँ पर शेरखाँ की प्रशंसा करता है। आदर्श राजा, पराक्रमी, योध्दा ,सच्चा देशभक्त और सदसद विवेक बुध्दी का अनुयायी, राष्ट्रीय एकात्मता स्थापित करनेवाला , देशभक्त के रूप में शेरखाँ का वर्णन किया है। शेरखाँ सिर्फ हुमायूँ के साथ लडने के लिए सही वक्त का इन्तजार कर रहेा है। शेरखाँ कहता है कि लाड की दौलत हमारे पास होने के कारण हमे पैसों की जरूरत बिलकुल नहीं है। हिन्दू मुस्लिम दोनों सेना इकठ्ठा होती जा रही है। बाबरी की नोकरी करके मैं तो उसकी फौज में बलवा करा सकीगे इसकी मुझे उम्मीद है ऐसा ब्रह्मादित्य शेरखाँ से कहता है। ब्रह्मादित्य और शेरखाँ दोनों काम बटवार लेते है। शेरखाँ कहता है किसी भी हालत में हम मुगलों को हमारे मुल्क से बाहर निकालकर ही रहेंगे ऐसा मुझे यकीन हो रहा है। शेरखाँ निस्वार्थ रूप से प्रजा की सेवा में लगा हुआ है।

रात्री के घनघोर अंधेरे में चुपके से बुरखा पहने लाड निजाम के कमरे मे आ जाती है। निजाम घबरा गया है उसका मुख ठिक तरह से देख नहीं पाता। वह व्यक्ति लाड ही है

निजाम और लाड का प्रेम वर्णन यहाँ पर किया है। न मिलने का , न छुने का और मुख से बानु न कहने की सभी हद्द निजाम तोड डालता है। मैं हर बंधन तोडता ही जा रहा हूँ। मुझे भाभी के नकाब में छिपी हुई बानू को देखकर मेरा दिल बेकाबू हो जाता है। मैंने एक तसबीर बनाकर कसूर किया है , वह जिन्दगी भर मैं सजा भुगत रहा हूँ । निजाम खुद को सदोष देकर बुजदिल , बदनशीब और आचारहिन समझता है। भाभी के रिश्ते के मिटा देनेवाला इस समाज का दोषी मै हूँ , मैं कसुरवार हूँ , मुझे बडी-सी बडी सजा होनी चाहिए ऐसा निजाम कहता है।

यहाँ पर पाक मुहब्बत का वर्णन किया हुआ है। लाड की दो शादीयाँ होते हुए भी निजाम और लाड की मुहब्बत पाक है। हुमायूँ और शेरखाँ के बीच जंग चौंसा उर्फ झूसा गांव मे होगा। चौसा गांव में हुमायूँ का डेरा है। हुमायूँ सो रहा है। सभी ओर सैनिक मनोरंजन में और नर्तकियों के गान में लिन हो गये है। हुमायूँ को कुछ सैनिक सोते हुए उठाते है , जहाँपनाह , हुजूर, शेरखाँ ने एकाएक हमारे पर हमला कर दिया है। हुमायूँ नींद से जागते हुए क्रोधित होकर धोखा,दगा , फरेब कहकर उठ जाता है। हुमायूँ फौरन शेरखाँ से लडने के लिए सैनिकों को आज्ञा देता है। युद्ध का इशारा देनेवाला ढोल पिटा जाता है। सभी सैनिकों में कोलाहल मच जाता है। गडबडी से फौरन सैनिक तैयार हो रहे है। हुमायूँ कहता है कि हमें बहादुरी से ज्यादा दिल से लडना है। लेकिन जो वही होता है मंजुरे खुदा होता है। इस प्रकार हूमायूँ से लडते लडते दोनों ओर के सैनिक मारे जा रहे है, युध्द भूमी पर शवों का, रक्तपात और जखमी हाथियों की दर्दभरी चिल्लाहट सुनायी दे रही है। हुमायूँ और शेरखाँ का मुकाबला होता है आखिर शेरखाँ की जीत होती है और हुमायूँ को वापस जाना पडता है। यहाँ पर बडी चतुरायी से सही समय का मौका उठानेवाला बहादुर योध्दा के रूप में शेरखाँ हमारे सामने आ जाता है।

निष्कर्षतः चौथे अंक का प्रारंभ बंगाल का बिहार पर आक्रमण और शेरखाँ की हत्या के षडयंत्र से होता है और अंक का अन्त हुमायूँ अपने मुल्क में पराजित होकर वापस चला जाता है। 'शेरशाह' नाटक में यह अंक अपना अलग महत्व रखता है। इस अंक में शेरखाँ की वीरता और कूटनीति का प्रतिपादन होता है।

पाँचवा अंक -

इस अंक का प्रारंभ चौसा के मैदान में हुमायूँ और शेरखाँ में युध्द से होता है। युध्द के पश्चात शेरखाँ का नामकरण शेरशाह होता है। शेरशाह का राज्याभिषेक का वर्णन यहाँ किया है। इसाखाँ यह उमरखाँ के पुत्र है। वे कहते है कि शेरखाँ को पठान सल्तनत का बादशाह बनाया जाये। जिन मुगलों के सामने इब्राहिम लोदी, राणा सांगा, सुल्तान मुहम्मद लोदी और बहादुर शहा के मानिन्द बादशहा और राजा नहीं ठहर सके। उनके चौसा में दाँत खट्टे किये हमारे जनाब शेरखाँ साहब ने एक भिस्ती ने हुमायूँ की जान बचा दी। नहीं तो हूमायूँ नाम की कोई चीज इस दुनिया में नहीं रहती। दो शाही खानदानी पठानो में इस वक्त सुल्तान मुहम्मद लोदी और सुल्तान बहादूर शाह ताकदवार थे। लेकिन मुगलो के सामने कोई ठहर नही सका। " सुबेदार जलालखाँ साहब ने तो बिहार को बंगाल की नगर करके लुटिया ही डुबो दी थी। पठानों की ऐसी गयी गुजरी हालातों में एक मामूली जागीरदार के यहाँ पैदा होकर बिना किसी पुश्तैनी खिताब सुल्तनत और फौज के शेरखाँ साहब ने जो कुछ किया, वह तवारीख में एक नया सबक सीखता है।"[61] यहाँ पर सिर्फ आदर्श कार्य और सच्चा देशभक्त होने के खातिर ही शेरखाँ को सिंहासन मिला। इसाखाँ शेरशाह के बारे में कहते है " अगर हम हमले का सामना करें। बाहर से आये हुए मुगलों को मुल्क से निकाल कर बाहर आये हुए इन मुगलों का मुल्क में ही रहनेवालों की सल्तनत कायम करना चाहते हैं तो यह बिना काबील और बहादुर बादशाह के मुमकिन नहीं। बहारखाँ पठानों के सुबेदार ने फरीद से शेरखाँ बनाया था , आज हम शेरखाँ से शेरशाह बनाना चाहते है। "[62] शेरवानी साहब भी शेरखाँ की तारीफकरते है।

शेरखाँ और ब्रह्मादित्य का प्रवेश आगे के दृश्य में होता है। ब्रह्मादित्य शेरखाँ की तारीफ करता है। शूरता, दूरदर्शिता, धैर्य , त्याग और हिंदू-मुस्लिम दोनों धर्मो से प्रेम करनेवाला शेरखाँ दिखायी देता है। शेरखाँ मुसलमान इसलिए है कि मुसलमान के घर उनका जन्म हुआ है लेकिन हिन्दुओं का भला करनेवाला उनसे अधिक कोई हिन्दू नही है। शेरखाँ का राज्यभिषेक होता है। उस वक्त शेरखॉ बोलने के लिए खडा हो जाता है। मुझे वह दिन अभी भी याद है कि जब आम जनता मुझे मुल्क का दुश्मन और मुगलो का गुलाम

मानकर मुझ पर खफा थी। लेकिन उस नाराजी से मेरा दिल न गिरा था और न इस खुशी से मुझे नशा चढा है। अपने एक छोटे से फर्ज को अदा कर मैं अपका बादशहा होने की काबिलियत नहीं रखता। मैं जिन्दगी भर आपकी सेवा करना चाहता हूँ। निजाम अपने कर्मो पर पश्चाताप व्यक्त कर रहा है। भाईजान मेरी बात सुन लेते तो इतना मैं नही गिरता। ताजखाँ के बाद जैसे लाड आपकी हो गयी वैसे आपके बाद लाड मेरी हो जायेगी। इतना मैं गिर गया हूँ। शराब के साथ मुहब्बत की नशा बढती है। मुहब्बत में निजाम पागल हो गया है। प्यार में गिरने-की रफ्तार दिनबदिन बढती ही जा रही है। गिरने के बाद निजाम को उठना मुश्किल हो गया है। कलम से, सितार से, तस्वीर से और इस जिंदगी से निजाम रूकसत लेना चाहता है। निजाम आत्महत्या करने का प्रयत्न करता है, लेकिन सही समय पर उनके गुरूजी उन्हें बचा लेते है।

महल में जाल करके लाड की तसवीर को निजाम जला डालता है। उसकी आग महल में चारों तरफ लग जाती है। महल के अन्दर लाड मूर्च्छित पडी है। रेहमान चिल्लाकार लोगों को इकठ्ठा करता है। जाल थोडी कम हो जाती है और लाड बच जाती है। निष्कर्षत : हम कह सकते है भाई प्रेम से ज्यादा महत्व देशप्रेम को शेरशाह देता है। निजाम की पाक-मुहब्बत लाड के प्रति विविध रूपो में हमे देखने को मिलती है। ब्रह्मादित्य जैसा सच्चा देशभक्त मित्र मिलना बहुत ही आजकल मुश्किल हो गया है इसका वर्णन किया है। पाँचवे अंक का अंतिम दृश्य हुमायूँ का वर्णन दिखायी दिया है। गंगा के तट पर हुमायूँ के डेरे है। हुमायूँ की सेना में एक अलग प्रकार की भाग दौड मची है। इस सैनिकों के आवाज से कानों के परदे फॉटने का समय आ गया है। कुछ सैनिक गंगा तैर कर उस ओर जा रहे है। यहाँ पर मुल्क छोडते वक्त भी उन विदेशों को शान्ति नहीं मिली इसका वर्णन किया है। लाड अंत में पागल हो जाती है। इसका पता एक दिन निजाम को प्रजा से चलता है। हुमायूँ के सारे वस्त्र भीग गए हैं। न सिर पर पगडी है न पैरो में जूते। खाली हाथ सम्राट हुमायूँ को भारत से लौटना पडा इसका नाटकीय संवादों से वर्णन 'शेरशाह 'नाटक में किया है।

'शेरशाह ' नाटक का अन्त दुखान्त है। दिल्ली के बाहर शेरशाह के समय के कुछ इमारत, कुतुबमिनार और शेरशाह का किला दिखायी देता है। निजाम की स्थिति

पागलों जैसी हो गयी है, दाढी बढायी हुई है, फकीरा जैसी वेशभूषा, हरे रंग का हाथ में चोला, दाहिने हाथ में मन का, बाये हाथ में कमण्डल इस प्रकार निजाम का वर्णन यहाँ पर दिखायी देता है। हर एक औरत को लाड के रूप में निजाम देखने की कोशिश करता है। निजाम जीवन के प्रति निराश है। खुदखुशी का प्रयत्न भी असफल रहा, गुरूजी ने आकर निजाम को बचा लिया। गुरूजी के लाख समझाने पर निजाम का हृदय परिवर्तित होता है " भाई साहब तो अपनी रिआया से ही मुहब्बत कर सकते है, मुगल उनके दुश्मन है, इसलिए उनसे नफरत करते है, लेकिन मेरे... मेरे लिए तो सभी आदमी भाईजान और सभी औरतें लाड के मानिद प्यार...मुहब्बत करने की चीज हो जायेंगी। हाँ, लाड की मुहब्बत में गुरूजी के लफजों में मेरे दिल में जो वासना थी वह ... वह उस मुहब्बत में न रहेगी। " निजाम के नसीब में मुहब्बत यह एक चीज है सिर्फ चीज है। कभी भी वास्तविक जीवन में नहीं आती।

हिन्दू-मुसलमान भाई अपने राज्य और राजा के बारे में यहाँ पर बाते कर रहे है। निजाम गाना गाते हुए अचानक रूक जाता है और उनकी ओर ध्यान देता है। वे लोग आपस में कहते है, शेरशाह एक आदर्श राजा, सर्वधर्मसमभाव का प्रतिक और निस्वार्थी मुस्लिम पहला राजा है। जितना आदर वे मस्जीद का करते हैं उससे बढकर मन्दीर का भी करते है। प्रजाहित की चिन्ता वे रातदिन करते हैं। शेरशाह मामूली जागीरदार का पुत्र होकर गरीबी का एहसास और परिश्रम करते हुए आज पूरे सल्तनत का बादशाह बन गया है। सभी को पूरा सुख समाधान यहाँ पर मिला है इसके पहले कभी देखा तक नहीं। निजाम-लाड के बारे में भी सारी जानकारी हासिल करता है और उसे पता चलता है कि नसीम मैना सहेली के जाने के बाद लाड पागल हो गयी है। तब पूर्ण रूप से निजाम की पाक मुहब्बत टूट जाती है और निजाम रो पडता है। इस प्रकार शेरशाह नाटक का अन्त दुखान्त होता है।

निष्कर्ष :-

' शेरशाह ' नाटक में भारत के इतिहास का दर्शन दिखायी दिया है। एक साधारण कृषक युवक ने दृढ प्रतिज्ञा, साधना का व्रत लेकर वास्तव्य का नक्शा ही बदल दिया है। पृथ्वीराज चौहान और राणा साँगा जैसे महायोध्दा मुगलों को रोक नही सके। वहाँ सम्राट चन्द्रगुप्त की तरह शेरशाह ने उनके पैर उखाड दिये और फिर से स्वदेशी साम्राज्य

की नींव रखी। साथ ही साथ शायद भारतीय इतिहास में पहली बार साम्प्रदायिकता की उलझनों से उपर उठकर शेरशाह ने भारतीयता का आदर्श स्थापित किया है। मुगलों के काल का वर्णन 'शेरशाह' नाटक में दिखायी देता है।

अफ़ानों की प्रारंभिक स्थिति, मुगलों से होनेवाले हमले, युध्दों का वर्णन जौनपुर एवं बिहार शरीफ में होनेवाली किसानों की विपन्नता, किसानों पर होनेवाले अत्याचार, शेरशाह व्दारा किए गये सुधार और ब्रह्मादित्य की कूटनीति का वर्णन ऐतिहासिक घटनाओं के साथ शेरशाह में किया है। शेरशाह का असाधारण चरित्र इस नाटक में दिखायी देता है। आदर्श राजा, प्रजा का हितचिंतक, साम्राज्य का निर्माता, व्यक्तिगत प्रेम से राष्ट्रप्रेम को महत्व अधिक देनेवाला, दृढनिश्चयी, सर्वधर्मसमभाव का द्योतक और मुसलमानों का पथप्रदर्शन शेरशाह करता है।

'शेरशाह' नाटक में निजाम एवं लाड मलिका बानू के प्रसंग से नाटक में रोमंटिक वातावरण दिखायी देता है और जिज्ञासा प्रेक्षक वर्ग की बढती ही चली जाती है। निजाम लाड की पाक मुहब्बत के जरिए से भारतीय संस्कृती, आदर्श बंधनों का और आदर्श नारी का सच्चा रूप हमारे सामने आ जाता है। निजाम का कवि हृदय यह प्रेम का प्रतीक है। लाड बानू नाटक की प्रमुख नारी पात्र है, अमीर, असंतुष्ट, यौन-क्षुधा से पीडित एक असफल प्रेमिका के रूप में चित्रण किया गया है। मुगलों को इस मुल्क से निकलने के लिए हुमायूँ को किस तरह बर्ताव करना पडा इन सभी का सुन्दर चित्रण शेरशाह नाटक में किया है।

निष्कर्षत: शेरशाह की चरित्रगत विशेषताओं के कारण ब्रह्मादित्य का मित्रप्रेम,निजाम-लाड की पाक मुहब्बत के कारण स्वाधीन भारत का शेरशाह का सपना सफल होता है। 'शेरशाह' नाटक के जरिए से हमें राष्ट्रीय एकात्मता और देशभक्ति का संदेश मिलता है।

संदर्भ सूची

1. भरतभूमि, नाट्यशास्त्र, पृष्ठ क्रमांक 84,85
2. भरतभूमि, नाट्यशास्त्र, पृष्ठ क्रमांक 10
3. वही, पृष्ठ क्रमांक 2
4. वही, पृष्ठ क्रमांक 25
5. वही, पृष्ठ क्रमांक 34
6. वही, पृष्ठ क्रमांक 36
7. वही, पृष्ठ क्रमांक 40
8. वही, पृष्ठ क्रमांक 47
9. वही, पृष्ठ क्रमांक 48
10. वही, पृष्ठ क्रमांक 65
11. वही, पृष्ठ क्रमांक 67
12. वही, पृष्ठ क्रमांक 68
13. वही, पृष्ठ क्रमांक 79
14. वही, पृष्ठ क्रमांक 80
15. वही, पृष्ठ क्रमांक 89
16. वही, पृष्ठ क्रमांक 91
17. वही, पृष्ठ क्रमांक 100
18. वही, पृष्ठ क्रमांक 102
19. वही, पृष्ठ क्रमांक 109
20. वही, पृष्ठ क्रमांक 113
21. वही, पृष्ठ क्रमांक 115
22. वही, पृष्ठ क्रमांक 118
23. वही, पृष्ठ क्रमांक 117
24. वही,पृष्ठ क्रमांक 127

25. वही, पृष्ठ क्रमांक 128
26. वही, पृष्ठ क्रमांक 128
27. वही,पृष्ठ क्रमांक 128
28. वही,पृष्ठ क्रमांक 130
29. वही,पृष्ठ क्रमांक 37
30. वही,पृष्ठ क्रमांक 48
31. वही, पृष्ठ क्रमांक 53
32. वही,पृष्ठ क्रमांक 74
33. वही,पृष्ठ क्रमांक 82
34. वही,पृष्ठ क्रमांक 84
35. वही,पृष्ठ क्रमांक 85
36. वही,पृष्ठ क्रमांक 86
37. वही,पृष्ठ क्रमांक 89
38. वही,पृष्ठ क्रमांक 92
39. वही,पृष्ठ क्रमांक 109
40. वही,पृष्ठ क्रमांक 113
41. वही,पृष्ठ क्रमांक 117
42. वही,पृष्ठ क्रमांक 119
43 वही,पृष्ठ क्रमांक 140
44. वही,पृष्ठ क्रमांक 145
45. वही,पृष्ठ क्रमांक 146
46. वही,पृष्ठ क्रमांक 156
47. वही,पृष्ठ क्रमांक 11
48. वही,पृष्ठ क्रमांक 20
49. वही,पृष्ठ क्रमांक 34

50. वही,पृष्ठ क्रमांक 44
51. वही,पृष्ठ क्रमांक 46
52. वही,पृष्ठ क्रमांक 61
53. वही,पृष्ठ क्रमांक 70
54. वही,पृष्ठ क्रमांक 81
55. वही,पृष्ठ क्रमांक 81
56. वही,पृष्ठ क्रमांक 83
57. वही,पृष्ठ क्रमांक 89
58. वही,पृष्ठ क्रमांक 94
59. वही,पृष्ठ क्रमांक 118
60. वही,पृष्ठ क्रमांक 125
61. वही,पृष्ठ क्रमांक 143
62. वही,पृष्ठ क्रमांक 172